

प्रस्तावना ।

इम पंचम फलिफाल के अन्दर जैनधर्म को फैलाने वाले चर्पतीर्थकर श्री महावीर मधू ये और आज भी हम उनके पन्थे हुवे, आगमों का आश्रय लेकर उनको पूर्ण श्रद्धा के साथ मानते हैं परन्तु इस दुखमी फलिफाल के मारम्भ में कई प्रचण्ड युद्ध और दुष्काल पड़े हैं । इस कारण से ही हमारे विद्वान् मुनि अपने मिनेन्द्र देव के पन्थे हुवे आगमों का प्रचार अच्छी तरह से नहीं कर सके । परन्तु इस विविध शान्ति प्रिय राज्य के अन्दर हम सर्व को इस सचे केवल-ज्ञानी के पन्थे हुवे दयालय वर्ष को फैलाने के वास्ते स्वतंत्र गौका मिल गया है । मनुष्य जब कोई अच्छी बात को चलाने की कोशिश करता है तो पहले उसको अनेक संकट पड़ते हैं । यदि उन संकटों की विलकुल परवाह न करते हुए अपने कार्य को करे तो उसका कार्य शीघ्र मिट्ट हो जाता है वैसे ही हमारे तीर्थंकरों के पन्थे हुवे आगमों का प्रचार करने में हमारे मुनिवर्ग के उपरमर्णतिक कष्ट भी हुए है परन्तु वह विलकुल उनकी परवाह न करते हुवे अपने सचे आगमों का प्रचार करते रहे हैं । और दिन पर दिन जन मन से कर रहे हैं । परन्तु पहिले की अपेक्षा अब श्रावकों में धार्मिक ज्ञान बहुत कम है । इसी कारण से अब कोई विद्वान् साधु या श्रावक कोई सही बातों का संसोधन करके दिखलावे तो उनको देखने में भी बड़ी आलस रहती है । और इसी कारण धर्म की हानी दिन पर दिन होती जा रही है ॥

कई कारणों से जैन पंचांग का चलना बन्द हो गया और लोगों ने अपने २ मत के अनुसार पंचांग बनाये वह मथा आज दिन तक चली आ रही है, ऐसा पुराने ग्रन्थों से मान्य होता है । देखिये सूर्यसिद्धान्त जिसको बने हुवे २२६५०० वर्ष हुवे और खगोल विद्या का मन् है ऐसा जैनतर मानते हैं, जिसमें लिखा हुआ है कि पहिले सायन पंचांग चलता था । दूसरा हिन्दुस्थान के अन्दर निकलता हुआ हिन्दी "सरस्वती" नाम का अलवार उस में भी इस पंचांगों की निसवत

मन्त्र १८११ फरवरी मास की मारस्वती में लिखा था उसका भी सारांश हम आपको नीचे बतलाते हैं, विभाजी रघुनाथ लेले महाशय का जन्म शक १७४८ में हुआ था, मगध अठारह वर्ष की अवस्था में विभाजी एक दिन धूप में बैठे थे। उनको उस समय सन्देह हुआ कि मकर शक्रांति के अभी बहुत * दिन हैं, परन्तु दिन अभी से बढ़ने लगा। इसका क्या कारण है, इस प्रश्न को उन्होंने कई पंडितों और ज्योतिषियों से पूछा परन्तु किसी में सन्तोषकारक उत्तर न मिला तो उनका सन्देह बढ़ता चला गया। तो फिर उन्होंने पूने के प्रोफेसर फेराल्लतणछत्रे के साथ लिखा पढ़ी बहुत की। आखिर उसने भी सायन मत सही मान लिया, और काशी के बापूदेव की स्फार्पणा उन्होंने स्वीकार करली ॥

संपोगवत्त एकबार शङ्कराचार्य ग्वालियर आये। विभाजी उनकी सेवा में पहुँचे और उनको भी सायन, निरयन, वाद कह सुनाया। जब शङ्कराचार्य ने विसाजी के मन को सब प्रकार नाँव लिया और सबा पाया तब एक दिन उन्होंने सभा की सभा में लखर (ग्वालियर) के सारे पंडित और ज्योतिषी एकत्र हुए। बहुत वाद विवाद के बाद खेले का ही मत सबा ठहरा। अतएव शङ्कराचार्य ने उनको सायन प्रथा के अनुसार श्राद्धादिक कर्ष करने की लिखी हुई आज्ञा दे दी ॥

फिर जब लोगों का खेले ने कोई आलेप न छोड़ा और सब मानि उन्होंने को चुप करा दिया तब धड़के के साथ अपने सायन मत के अनुसार सारे त्योहार मनाने प्रारम्भ कर दिये। जब निरयन प्रथा के अनुसार दिवाली होती थी तब वे अपने दरवाजे पर मोटे मोटे अक्षरों में लिख देते थे कि आज वेदोक्त दिवाली नहीं है, जब सयन दिवाली पड़ती थी तब वे सूब धूप पाम से मानते थे। फिर विभाजी ने सायन पंचांग बनाया और उसको मराठी के अण्णोदय नामक पत्र के क्रोडपत्र के रूप में निरूपित था। उमी पंचांग की समालोचना करते समय कीर्तिहर्ष साहब ने लिखा है नीचे मुनबः—

The Sanskrits put down in these (निरयन) calendars are clearly no longer what according to the definitions of the ancient and authoritative works they should be. In new (सायन) calendars, the talk and makara sankranti of all really as they should on the longest

* २१ या २२ दिन का करक है ॥

and shortest days of the year A Hindu who, in the performance of his religious ceremonies should allow himself to be guided by these (साधन) conditions, would at all times perform those ceremonies at the right season

भाषार्थ ।

इन निरायन पंचाङ्गों में लिखी हुई संक्रांतियां अब वैसी नहीं रही हैं, जैसी कि उन्हें पुरातन और सर्वमान्य ग्रन्थों की परिभाषा के अनुसार होनी चाहिये। साधन पंचाङ्ग में रफ्त और मकर संक्रांतियां वस्तुतः वर्ष के सब में बड़े और सब से छोटे दिनों पर जैसे कि चाहिए पड़ती थी हैं, जो हिन्दू अपने धर्म कृत्यों के सम्बन्ध में साधन पंचाङ्ग के अनुसार कार्य करेगा वह उन का ठीक समय पर होगा। यदि हमारे पास पुराने ग्रन्थों में से खोजना हमके निकाले हुये पुराने हैं कि जिस से मालूम होता है कि साधन पंचाङ्ग ही सत्य है, अब आप सोचिये कि जिन अन्य मती लोगों के शास्त्रों को आप अल्पज्ञों के बनाये हुए कहते हो और उन्हीं को अपने परमपूज्य वा सर्वमान्य बना रक्खा है और उन्हीं के आधार से सर्व धर्म कर्म कर रहे हो तो क्या अपनी भूल नहीं है, अब सुनिये साधन और निरायन का अर्थ क्या होता है, साधन = इस का अर्थ ऐन सहित यानि ऐन बदले उसी दिन कर्म और मकर संक्रांति हो, और निरायन = का अर्थ ऐन रहित यानी ऐन तो नहीं बदलती मगर कर्म और मकर संक्रांति हो अर्थात् बिना ऐन, अब देखिये इस बात को तो विद्वान से अकर मूर्ख तरु समझ सकता है कि जिन पंचाङ्ग में ऐन नहीं वह सच्चा कैसे हो सकता है, परन्तु इसी ऐन रहित पंचाङ्ग का प्रचार वर्तमान में विशेष करके हो रहा है इस रुढ़ी को मिटाने के वास्ते हमारे परमपूज्य श्री १००८ श्री सोहन लाल जी महाराज ने बीरप्रभु के परमपूज्य हुवे, चन्द्रप्रभृति, मधुद्वीपप्रभृति, ठण्णायाग समवायाग, आदि सूत्रों में जो उद्योगिय विद्या है उस में जिस तरह तिथि नत्तन करण, दिनमान वगैरा बतलाया है वह सर्व साधन मत के अनुसार ही मिलता है। जो निरायन मत के अनुसार धर्म कर्म हो रहे हैं वह ठीक समय पर नहीं होते, इन सर्व दोषों को मिटाने के लिये जैन सूत्रों की शैली की रहस को जान कर पूरे अनुभव के साथ चातुरमास सम्प्रतरी, पत्नी, अष्टमी ठीक होजावे इस हेतु से जैन पत्रिका बनाई है यह सर्व जैनमान को मानने योग्य है। निरायन पंचाङ्गों से कौन २ से सूत्र विरुद्ध बात है सो आप को बतलाते हैं।

(१) चैन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र वा आसीन, इतने लौह (अधिक) मास पड़ते हैं अन्य मास में ।

(२) नवम्बर २७ पत्नी में लगते हैं ।

(३) एक तिथी को ज्येष्ठ में ६६ घड़ी की और कम से कम ५४ घड़ी की मानते हैं और उन के ब्रह्म विनास में २४ घंटे से नुन तिथि मिली है ।

(४) जब दिन बढ़ जाने का भय होनावे तो एक दिन सूर्य को खड़ा कर देते हैं और घंटे मिनट जो लगते हैं वहां पर तो कई दिन तक घटाते बढ़ाते ही नहीं दे ।

(५) कभी २ दो तिथि घटा कर १३ दिन का पर्व और कभी १६ दिन का कर देते हैं इसी वास्ते जैन और अन्यमत की तिथि का बा घड़ी पलों का फरक रहता है दिनमान कभी १, १३, २, ४, ५, ६ तक घटा बढ़ा देते हैं जैन में ४ भाग ६१ या घटाते बढ़ाते हैं ।

(१) जैन प्राणियों में तो फेरबल वीर्य और आपाढ़ ही अधिक मास कहे हैं ।

(२) जैन शास्त्रों में नवम्बर २८ माने गये हैं पर १५ या कभी १४ दिन का माना है ॥

(३) जैन शास्त्रों में तिथि को ५६ घड़ी जानेरी मानी है इत्यादि अनेक कारण हैं एक और भी बातला देते हैं कि जितने निरापन पंचाङ्ग अब हिन्दुस्थान में चलते हैं वह एक दूसरे के साथ नहीं मिलते, और जिस प्रकार से वे धर्माधुन्यफलादेश बातलाते हैं, वह भी बहुत कम मिलता है इस लिये विचारशील विद्वान् पुण्य व स्त्रियों का पर्य है कि अपने दिन ग्रहण का अवश्य विचार करें ॥

निरापन पंचाङ्ग के जरिये से चातुर्वर्ति पांच महीने का होता है और पक्षों परावर नहीं होती और छमच्छरी का क्षगढ़ा ही रहता है इत्यादि जो फर्क हो रहे हैं उन का किर्त कारण यही है कि मापन पंचाङ्ग की बीजदृगी नहीं इसी वास्ते पुनः जैन वन्दुओं से निवेदन है कि अपने आगमों के प्रतिकूल जितनी बातें हो रही हैं उन को

छोड़ कर अनुकूल कार्य करें। और इस तिथि पत्रा का इस पंचमहाल में कितनेक आसे से आया था जिस को भिटाने के कारण अहमदनगर निवासी श्रावक रायचन्द्र जी ने पंचाङ्ग बना बा छपवा के भिटा दिया था परन्तु उस में कईएक अधुद्धियां रह गई थीं जिस को संशोधन करने के वास्ते बहुत से सूत्रों के पाठ देखकर उनके अनुसार उसको संशोधन करके अब यह तिथियत्रिका तयार किया गया है। और जो इस में तार लगाये गये हैं सो उन तारों का जिक्र न तो जैन सूत्रों में ही है और नार्थ किसी अन्य प्राचीन ग्रन्थों में ही है क्योंकि विक्रम सम्वत् १६६० के साल का छपा झुंडवा मूर्त्य मिर्दान के पृष्ठ ११७ में लिखा है कि—प्राचीन समय में चार और योग्य पंचाङ्ग के भंग नहीं थे, और आगे जाके उसी पृष्ठ पर लिखते हैं कि और प्राचीन ग्रन्थों में चार, योग, करण, शब्दसे न किसी यज्ञादि का विधान पाया जाता है इस वास्ते मालूम होता है कि इन तारों का पहले यहां पर प्रचार नहीं था। और सरस्वती अखबार में यह जिक्र है कि चार यूनान देश से किसी वषत मुसलमानों के राजहाल में आये हैं सो हम ने भी लोगों के सम्झने के वास्ते लगा दिये हैं तांकि इस से तिथि वगैरा भा पता अच्छी तरह से लग जाये।

इस पत्री के वास्ते सूत्रों के पाठ ।

और जो इसमें तिथियां लगाई हैं सो वह चन्द्रमा का दिन है, सो इसी को तिथी कहते हैं। जिसका प्रमाण समवायंग सूत्र के २६ में समवायंग में है—त्रयपाठ चन्द्र-दिनेषं पयुगती सं० महत्ते सारिगे महत्तेयेणं पणने, और भी परमाण देखिए कि चन्द्रपन्नति सूत्र के १० प्राभृतक की पंचदशी प्राभृतिका में भी २६ महत्ते ३३ भाग का चन्द्रमा का दिन कहा है और यही २० वी प्राभृतिका में जिक्र है, और यही मूर्त्य पन्नति में जिक्र है भाचा अर्थ-चन्द्रमा का दिन ५६ पड़ी ५ भाग का होता है इसीको तिथी कहते हैं और चन्द्रमा कि अर्द्ध तिथी को करण कहते हैं सो करण ११ हैं जम्बुद्विपन्नति सूत्र में विवर्णन हैं जिसमें मत्तकरण तो चार है और ४ करण स्थिर है युग की प्रादि से इतने बोल लगते हैं जम्बुद्विपपन्नति सूत्र में कहा है तत्र पाठ-गोमया चन्द्रादिया संकरा दाखिणाईया अयंशा पाउमाईया उऊ सावणाई या मासा यद्व्याईया पला दिवमाई या अहोरत्ता रोदाईया महभा बालवार्इया कारणा अभिज्ञाईया न रक्ता पणता ॥ भाचा अर्थ है—गोमय—मयमें चन्द्रमन्वतसर में युगकी

* १ जिन के मिलने का पता—शास्त्र प्रकटा कार्यालय विदुदपुर—मुजफ्फरपुर। राजाला मेरुचंद लक्ष्मणदास गृहद मिठा लाहौर।

भादि लगती है उसी ही रोज प्रथम मध्य ही नया सप्तरसर लगता है और द्वात्रिंशत्पण में सूर्य की ऐ न बदलती है और चंद्रमा उस रोज उत्रापण में होता है पावस ऋतु लगती है और उसी ही मध्य श्रावण मम लगता है प्रथमा कृत्त पक्ष लगता है प्रथमा दिवस लगता है और रुद्रनाम प्रथमा महर्त्त में युग की आदि लगती है वासवरात्र में और औपोजित नक्षत्र का प्रथमा सपथ में आदि लगती है ऐह उषोक्त ८ बाल जिस दिन मिले उसी रोज युगकी आदि लगती है उसी रोज अभिन्दनाम (श्रावण) मास की प्रथमा तिथि श्रावण वदी एकम लगती है इसको मून में नंदा भी कहा है ॥

यदि कोई पुरुष की आपने नवा सप्तरसर कहा से लगाया तो आप इसका भी प्रमाण लिजीये श्रीजम्बुद्विपपन्नति सूत्र में कहा है के जब सूर्य प्रथमा (अभ्यतर) महर्त्त की मरण करके चलता है उस दिन १८ महर्त्त (१६) घड़ी का दिनमान होता है और रात्री १२ महर्त्त (२४) घड़ी की होता है उसी दिन मिथुन की शंक्राति पूर्ण होती है उससे आषाढ़ की पूर्णमासी चलते हैं अगले रोज सूर्य बदलता है कर्क की शंक्राति लगता है तत्रपाठाज्वाणंभंत्त सूरिएसवर्धितं मंडलं उवसंकमिचा चारंवेरई तपाणां के महाजल दिवने के महाजला राई भंवांत गोपमा तपांज उत्तम कठ पत्ते उकोसए अठारस नुहत्ते दिवसे भंवांते जहणिया दुवाल्सस मुहत्ताराईभंवांते से निलम मांजे, मुरिए, जंवेसवर्धनं, अपमाणे, पटपोंस, अठारंतसि, अभितरांजंतरं, मंडलं, उवसंकमिचा, चारंवेरई, जयाणं, मुरिए, अभितरांजंतरं, मंडलं, उवसंकमिचा चारंवेरई, तपांज, केमहाजल, दिवसेभंवांते, केमहाजल, राईभंवांत, गोपमा तपांज, अठारसस मुहत्तेदिवसेभंवेरई, दाहिणगाठेभागं, मुहत्तेहिजे, दुवाल्सस, मुहत्ता, राईभंवांते, दाहिणगाठेभागं मुहत्तेगई, भादिवा, शनैरचनात्, एहीपाठचंद्रपन्नति सूत्र के प्रथमा प्रभृतिक की पटपौ प्रभृतिकामे है और सूर्य पन्नति में भी है उमोक्त पाठ सावित करता है कि आषाढ़ शुदी १५ को दिनमान १६ घड़ी (१८००००) का होता है क्योंकि चंद्रपन्नति मून के १० दशमा प्रभृतिक की दशमी प्रभृतिकामे तथा सूर्य पन्नति वा जम्बुद्विपपन्नति में कहा है के आषाढ़ के पहिले पौ वीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं तत्रपाठ, गिमहाणं, भंत्ते, चउयं, मांभं, केई, जलत्ता, नेत, गोपमा, तिथिनखत्ता, नेई, तंजहा, मूलो, पुब्बासादा, उमगासादा, मूजं, चोद्रम, रांदिवाई, जेई, पुब्बासादा, पनरस, रांदिवाई, नेई, उत्तगासादा, एंगराई, दिपं, नेई, तपांज, दहाए, मपचउरंस, सेठाणं, सेठिया, • यह मिथला नगरी वा प्रमाण है । और जगह उन्ही नीची धरती क सत्र स कम १० नो जिसदिन उस क्षेत्र म बड़ा दिन हो उस रोज रस-हना चाहिए ।

पोर, मंडसाए, मरुवाय, मणरीजवाएछायाए, मुरिए, अणुपरिषदति, तस्सणं, मामस्स, जेतवारमे दिवमे, नंसिचणं, दिवमंसि, लेहठाई, दोपवाई, पोरिसिधिवंति, तथा उत्राधेन मूत्र के पट्टिरोति अथाय ११ गोदनी भाषा में कहा है, तत्र मूलपाठ, आस, देनासे दुपया, पोसेपासे, चउपया, चिचासोए मृगासिमु, तियाया, हवाई पोरसी १३ और भी ममाण देतिए श्रीसमचापंग मूत्र के चतुर्विंशति समरायंग का मूल पाठ, उचरायण, मयणं, मुरिए, चउवीसंगुलिण, पोरसीछायां, निवत्तई, ताणं, निषट्ठति, इत्थादिप्रमाणों से साबित होता है कि भाषाट छुदी १५ के दिन दिनमान बढ़े से बढ़ा १८ मूहत्त तथा (३६) घड़ी का उत्कृष्ट होजाता है इसी वास्ते दो पग छाया में पोरसी दिन आता है, और उसके अगले दिन से मूर्ध्व दक्षिणायन में जाता है उती रोजसे दिन घटना शुरू होता है और रात्रि बढ़ने लगती है वह फर्क संक्रांति का पहिला दिन है इसीको आरणवदी एंकम कहते हैं इसी मास को अभिंद भी कहते हैं सो यह युग विक्रम सम्वत् १६७२ ज्यैष्ठ शुदी १५ । रविवार और जैन आर्वण रदी १ से शुरू होता है यानि यहाँ से लगता है सो हमने उसी दिन लगाया है, और उस दिन तक बीर नियाण सम्वत् २४५३ साँडे आठ मास बीत चुके सो इस का तुलना इस तराह है आप ममज्ञ लीजिए ॥

हीन वर्ष साँडे आठ मास चौथे और के रहते थे तत्र भगवंत श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष मये उनके ४७० वर्ष पीछे विक्रम राजा को राज पद हुआ फिर उन्होंने तेरे वर्ष पीछे अपना सम्वत् चलाया थाऊत सम्वत् तें आज दिन तक १६७२ का सम्वत् चल रहा है सो उसमें से विक्रम सम्वत् १६७१ कातिक वदी १५ तक २४५३ वर्ष हुए और सम्वत् १६७२ ज्यैष्ठ शुदी १४ लोकीक और जैन आपाठ छुदी १५ तक २४५३ वर्ष साँडे आठ मास हुये जिनमें से ३ वर्ष साँडे आठ मास चौथे और के निकाल दें तो बाकी २४५० वर्ष रहे जिसके ४६० युग पांचवें आरेके विने और ४६१ वें पा युग लगा है बाकी पांचवें आरेके १८५५० वर्ष रहे

१. ० ईसवी सन १६०६ की छया पुई महाराजा विजय की स्वानेह उमरा जिसको हकीम रामकिशन जाधोरयाले ने आठमी दफा छपवाई है जिसमें लिखा है कि ईसवी सन ८६ साल पहले महाराजा विजय पैदा हुए थे और बीस साल की उमर में राजपद हुआ फिर ईसवी सन १७ वर्ष से पहले ही अपना सम्वत् का प्रारंभ किया ।

आदि लगती है उसी ही रोज मध्य मध्य ही नवा सम्भार लगता है और दक्षिणापण मे सूर्य की ऐ न घटती है और चंद्रमा उस रोज उत्रापण मे होता है पारस कुट्टु लगती है और उसी ही सपय श्रावण पास लगता है मयमा कुण पत्र लगता है मयमा दिवस लगता है और रुद्ररनाम मयमा महर्च मे युग की आदि लगती है वात्सरारण मे और अभिजित नक्षत्र का मयमा सपये मे आदि लगती है पेश उपोक्त ८ बोल जिस दिन भिजे उसी रोज युगकी आदि लगती है उसी रोज अभिनेदनाम (श्रावण) पास की मयमा तिथी श्रावण नदी एकम लगती है इसको सूत्र मे नंदा भी कहा है ॥

यदि कोई पूछे की आपने नवा सम्भार कहां से लगाया सो आप इसका भी प्रमाण लिजीये श्रीजम्बुद्विपपन्ति सूत्र मे कहा है के अब सूर्य मयमा (अभिषार) पादले को पहण करके वज्रता है उस दिन १८ महर्च (१६) पक्षी का दिनमान होता है और रात्रि १२ महर्च (२४) पक्षी की होता है उसी दिन पियुन की शंक्रांति पूर्ण होती है उसको आपाठ की पूर्णवासी बोलते हैं अगले रोज सूर्य घट्यता है कर्क की शंक्रांति लगती है तत्रवाडा जवाणभंचे मूरिपसवभितर मंडले उभंसंक्रमिता चारंवेरई तयाणां के महालय दिवसे के जहालया राई भंचति गोवणा तयांज उत्तम कठ पचे उकोसए अठारस नुहचे दिवसे भंचति जहणिया दुवालसस मुहचारार्भवंति से नितिम माणे, मूरिप, जंवेसम्भार, अयमाणे, पदमांस, अशरंतिसि, अभितरांजंतर, मंडले, उभंसंक्रमिता, चारंवेरई, जयाण, मूरिप, अभितरांजंतर, मंडले, उभंसंक्रमिता चारंवेरई, तयांज, केमहालय, दिवसेभंचति, केमहालय, राईभंचति, गोवणा तयांज, अठारस मुहचेदिवसेभेवेरई, दोंहिपगाठेभाग, मुहचोंहिजे, दुवालसस, मुहचा, राईभंचति, दोंहिपगाठेभाग मुहचोंहि, आदिवा, शतितचनाद, एरीपाठवद्रपक्रांति सूत्र के मयमा मयतिक की घटयी मयतिकमे है और सूर्य पन्ति मे भी है उमोक्त पाठ साधित करता है कि आपाठ शुद्धी १५ को दिनमान १६ पक्षी (१८५ महर्च) का होता है क्योंकि चन्द्रपक्षति सूत्र के १० दशमां माभुतक की दशमी माभुतकमे तथा सूर्य पन्ति वा जम्बुद्विपपक्षति मे कहा है के आपाठ के मदिने को तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं तत्रपाठ, गिम्भाणं, भंचे, चउयं, मांभ, केई, जलत्ता, नेति, गोवणा, तिणिनखत्ता, नेई, तंमहा, मूजो, पुज्वासाडा, उत्तरासाडा, मूजो, चोदस, राशंदियाई, जेई, पुज्वासाडा, पनरस, राशंदियाई, नेई, उत्तरासाडा, एंगसाई, दियं, नेई, तयांज, ४६ए, सपचउरंस, संठाणं, सेठिया, सेठिया,

* यह सिधना नगरी का प्रमाण है । और जगह उची नीची धरती क सपय स कम ३० गो जिसदिन उस रोज म बड़ा दिन हो उस रोज राग हावा चादिप ।

यह सर्व चन्द्रमा के माथ इतनी २ देर तक रहते हैं यह सर्व इस पत्री में लगाये गये है और दिनमान एक घड़ी के ५ भाग दिन प्रते घटता बढ़ता है सो इसमें लगा दिया है और इस पत्री में सूर्य मास भी लगाये गये हैं और ऋतुमास भी जिस को कर्म मास भी लिखते हैं वह भी लगा दिया है और नक्षत्रमास भी लगाया है और भी एक प्रमाण आपकी सेवा में निवेदन किया जाता है कि चन्द्रपञ्चाति मून के दशमा प्रभृतिक की विंशती माथीतिकाया कहा है कि सूर्य सम्बत्सर संबंधी तीसम स अतिक्रम्या एक चन्द्र मास अधिक पौष होता है, और फिर ३० मागिआते क्रम्या एक चन्द्रमा मास अधिक आपाद होता है ।

नथा च पुरा गये प्रदर्शनेन करणमाथा ॥ चं दशजोविसेयो आईचस्सप हविज्जमासस्स । तीसई गुणीडंनो हवेइहु अहिमाससउ एको १ इतिवचनात् ॥

यह एक युग में चन्द्रमा के २ मास लौद के आते हैं सा एक युग में साठ मास सूर्य के बीतते हैं एक मास साढ़े तीस दिन का होता है और साल ३६६ दिन का होता है और चन्द्रमा के ६२ मास मुक्ते हैं एक मास २८ दिन ५३ भाग का गिना है और चन्द्रमा का साल ३५४ दिन और एक दिन के ५३ भाग का होता है और चन्द्रमा के ६१ मास बीतते हैं एक मास तीस दिन और एक साल ३६० दिन का गिना जाता है और नक्षत्रों के ६७ मास बीतते हैं पाच वर्षों को एक युग कहते हैं, और युग के दिन १८३० होते हैं एक दिन ३० मुहूर्त का होता है जिस में एक मुहूर्त में मूर्त्य के चलन का प्रमाण की पुछा की है उस के उत्तर में श्रीमद बीर भगवान् कर्माते हैं कि श्री चन्द्रपञ्चातिमून के पंचदशमाप्रभृतिक में कहा है:—

तत्रपाठ ता जंजं महल उरुमकमिचा चारचोई ता तस्म२भटलस्स परिवेस्स अठा रस्स, तीसेभागसप ।

मऊई मंडुंससहसेणं अठाणउलिए५ स एहिंकेत्ता इति वचनात् ॥

भावार्थ—जिस १ माहले को प्रष्टण करके सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र चलते हैं उस २ माहले के एक लाल अठानवे सौ भाग किये तिस में से एक मुहूर्त में सूर्य

जिसके १७१० युग होते हैं यह सर्व मिलकर २१०० वर्ष हुए जिनके ४२०० युग होते हैं, एक युग पाँच वर्ष का होता है और एक युग में सूर्य की १० घण्टी है और चन्द्रमा की १३४ अंश दक्षिणायन उत्तरायण रूप होती हैं, जिस में प्रथमा वर्ष की प्रथमा आठवीं किम दिन होती है। और उस रोज चन्द्रमा के साथ कानसा नक्षत्र होता है और सूर्य के साथ कानसा नक्षत्र योग जोड़ता है यह चन्द्र पन्नति मन्त्र प्राशुतिक १२ वाँ में पूछा की है तिसका। वीर भगवान् ने यह उत्तर दिया है, तत्रपाठ, ता एतसिं, पंचपदे, सम्बत्तराण, पदमा, वामिक्य, आठौं, चंदे, केण, नक्षत्रेण, जोई, ता, अघितिणा, अभितस्सण, पदपसमय, तंसमपंचणं, मरेकेण, नक्षत्रेण, जोगजोई, तापुसेण, इतिवचनात्, भावाय, इन पाँच सम्बत्तर में पहले सम्बत्तर की प्रथमपंचण के दिन चन्द्रमा के साथ कानसा नक्षत्र जोग जोड़ता है, ई गोत्त, अभिजित नक्षत्र जोग जोड़ता है परन्तु अभिजित नक्षत्र पहले समय लगत ही चन्द्रमा के माग युग की आदि में जोग जोड़ता है उसी वक्त चन्द्रमा उत्तरायण में होता है और उसी ही समय सूर्य की अपण दक्षिणायण बदलती है उसके साथ पुष्यनक्षत्र होता है युग की आदि में और भी चन्द्रपक्षति सूत्र के ऐकादशमा प्राशुतिक में पूछा है कि चन्द्रसम्बत्तर कब लगता है तिसके उत्तर में भगवन् फरमाते हैं तत्रपाठ, ता एतसिं, पंचपदे, सम्बत्तराण, पदमस्स, चन्द्रसम्बत्तरस्स के आदिप तिर्वेद्या, तजिणं, पंचमस्स, अभिविदियस्स, सम्बत्तरस्स पञ्जवसाणे, सेण, पदमस्सचन्द्र सम्बत्तरस्स आदि यणंतरं, पुरे, कंडे समये, इतिवचनात्, भावाउथे पद पाठ कहता है कि जिस दिन पञ्चमां अभिवर्धनसम्बत्तरका अंतकासमय हो उसके अगले समय प्रथमाचन्द्रसम्बत्तर की आदि लगती है, और पंचमां अभिवर्धनसम्बत्तर का अन्त पंच होता है, चन्द्रपक्षति मन्त्रप्रभृत ११ वें में तत्रपाठ, तजिणं पदमस्स चन्द्र सम्बत्तरस्स आदि सेण पञ्चमस्स, अभिविदियस्स सम्बत्तरस्स पञ्जवसाणे अणतर पछाकंडे समये तंसमपंचणं चन्द्रेकेण नक्षत्रेण जोई ता उतराहिं आसादे उतराणं आसादाणं चरममये इतिवचनात् पंचमाभिवर्धन सम्बत्तर के अंत में चन्द्रमा के साथ उत्रापादा नक्षत्र जोया उसका भी अंत का समा होता है, और अगले समयनयायुग लगता है तब ही चन्द्रमा के साथ अभिजित नक्षत्र प्रथम समय ही लगता है, और जिन में नक्षत्र अवाधिसामने गये हैं जिसमें ६ नक्षत्र ४५ मुहूर्ती हैं और ६ नक्षत्र १५ मुहूर्ती है और १५ नक्षत्र तीम मुहूर्ती है और १ अभिजिति नक्षत्र ८ मुहूर्त १७ भाग का है

पूर्ण करने है, और २ वा ३ पाँदसे चन्द्रमां पहले निकलेगा क्योंकि नक्षत्र पिछे निकलेगें, तब उनका जोग मिलेगा ना तो नहीं क्योंकि अभितर और बड़ा मंडल का बहुत फास है उसकी चन्द्रमां से भी सीध है इस कारण भी चन्द्रमां कुछ वक्त पाँदले निकलेगा आसाइ छुटी पूर्णमासी को पूर्वाषाढा या उत्तराषाढा बाहिले पाँदले है बाहिरसे मंडल चन्द्रमां क साथ जोग जोड़ेगें आर दूसरे दिन चन्द्रमां आधिम नक्षत्र के साथ जोग जोड़ना है या श्रवण के साथ जोग जोड़ना है, वह परसे पाँदले अभिमत है, चन्द्रमां बाहिर से दूसरे पाँदले रहकर जोग जोड़ना है, इस वास्ते अभिमत श्रवण पाँदले निकलेगा चन्द्रमां पीछे और रात्रि पूर्ण फलान नक्षत्र भिन्न दिन में लगने १५ दिन रात्री पूर्ण परेगा पहिल ऊपर रहेगा आखिर पूर्ण करेगा इस बात को पंडित जनों को खयाल में रखनी चाहिए यह काम बड़ा ही विचार का है, इस बातसे विचार में काम लेंगे तो ठीक होगा ।

इस तिथी पत्र को देखने की रीति यह है ।

पाँदले पाने में रीतिार लग रहा है वह प्रथम युग का खाना है इसी खाने को पांच मास के अंत में बुधवार लग रहा है वहाँ तक देखना चाहिए इसी मुताबक सर्व जालकीयें मन्वत् १६७२ से १६७७ हाइयुदी तक २ दूसरे खाने में वृषभतिार में मन्वत् १६७७ से १६८२ हाइयुदी तक देखें फिर तीसरे खाने के बार में १६८२ से १६८७ हाइयुदी तक और चौथे बार के खाने में १६८७ से १६९२ हाइयुदी तक फिर पंचवां बार के खाना में १६९२ से १६९७ हाइयुदी तक और छठे बार के खाने में १६९७ से २००२ हाइयुदी तक फिर सातवें बार के खाने में २००२ से २००७ हाइयुदी तक देखने चाहिये यह १५ वर्ष हुए है और पांच वर्ष पाँदले फिर उपर में मन्वत् बदलाना पड़ता है और कुछ नहीं बदलता जैसा है वैसा ही रहता है, और इस पत्री में १ तिथी २ बार के मास लगाई गई है और नक्षत्र १ कारण ४ दिनमास ५ सूर्यमास की तारीख ६ क्रतु पांच की तारीख ७ युग प्रमाण ८ सूर्यके मास नक्षत्रों का जोग ९ और रात्रि

१८३० चन्द्रमा १७६८ नक्षत्र १८३५ भाग चलते हैं इसी ही हिसाब से एक युग के १८३० दिन की गिनती आती है परन्तु जो वक्त आंतरों में लगता है वह इस गिनती में शामिल नहीं आया मालूम देता है क्योंकि चन्द्रायन्तिम्ब्रमा प्रथमा भायुतक की षष्ठी प्रयुतिदा में कहा है कि जो मर्य चन्द्रमा एक मांडले से दूसरे मांडले जाते हैं उस का नाम विरूपमान है ।

विक्रपेई चिरुयाचीत्ता इति वचनात् ।

जो वक्त उस जगह में लगता है वह गणना में है इस वास्ते पांच वर्षों में एक दिन अनुमान प्रमाण बढ़ता मालूम देता है तो हम ने भी लगा दिया है क्योंकि बहुत दिनों से सुने थे कि एक दिन का फर्क रहता है तो वह यह ही फर्क था तो जब निकल गया और अन्य पंचाङ्गों में भी देखने में आता है कि वह दिनों की गिनती को अहर्ण गणने नाम से लगाते हैं तो वह भी देखा गया तो पांच वर्षों के १८३१ दिन ही लगाते हैं, तो एक दिन का फर्क निकलजाने से युग का प्रमाण भी ठीक मिलता है, और पत्नी का प्रमाण चन्द्रपञ्चति के द्वादश वां मयुतक में १४ दिन २२ सुहूर्त ११ भाग का लिखा है जिसके सुहूर्त ४४२ भाग ५३ होते हैं और एक मास के ८८५ सुहूर्त ५३ भाग होते हैं और कोई तर्क करके आपने वीरसम्बद २४५३ सांठे आठमास लिखे हैं और पत्नी ये २४४१ से थुलु फिया है तो क्या कारण तो भाई साहिब इसका कारण सिर्फ यह ही है कि अभी तक इसका प्रचार नहीं है इस वास्ते प्रचलित सम्यक् है वह ही लगाया है इसका खुलासा उपर लिख चुकें है और १५ सालका यह तिथी पक्का छपचुका है तो पंडित जन सूर्यों के साथ मिला के देख लेंगे ॥

और चन्द्रमा उदधी मिलता मालूम देता है, और रात्रि पूर्ण कर्त्ता नक्षत्र भी ठीक मालूम देते हैं परन्तु इतना खुला रखना चाहिए कि अब दक्षिणायण है या उत्तरायण है, क्योंकि दक्षिणायण उत्तरायण का फरक रहता है, जैसे कि मृगशिरा और पौष मास में चन्द्रमा पूर्णमासी को रात अनुमान ३४ घड़ीयां ३५ घड़ी की होती हैं, और उस दिन मृगशिर नक्षत्र को मृगशिर की पूर्णमासी पूर्ण करनी है, पुष्य को पौषी पूर्ण करनी है, यह बाहेरले मांडले का करके पूर्णमासी

पूर्ण करते है, और २ वा ३ घण्टेसे चन्द्रमां पड़े निरलेगा क्योंकि नक्षत्र पिछे निकलेगे, तब उनका जोग मिलेगा ना तो नहीं क्योंकि अभितर और बाह्य मंडल का वरन फाटते है उनही चाली चन्द्रमां ने भी सीप है इस कारण भी चन्द्रमां कुछ वक्त पछिले निरलेगा आसाइ छुदी पूर्णमासी को पूर्वाषाढा या उत्तराषाढा बाहिरले घण्टेके है बाहिरसे घंटन चन्द्रमां के गाय जोग जोड़ेगे आर दूसरे दिन चन्द्रमां अभिन्न नक्षत्र के साथ जोग जोड़ना है या श्रवण के साथ जोग जोड़ना है. वर घण्टेसे घण्टेसे घंटन चन्द्रमां है, चन्द्रमां बाहिर से दूसरे घण्टेले रहकर जोग जोड़ना है, इस बातसे अभिन्न श्रवण पछिले निरलेगा चन्द्रमां पीछे और रात्रि पूर्ण फलान नक्षत्र भिन्न दिन में उगने १५ दिन रात्री पूर्ण परेगा पहिले जंग रहेगा आखिर पूर्ण करेगा इस बात को पढित जनों को खयाल में रखनी चाहिए ना काम बढा ही विचार है, इस बातसे विचार ने काम करेंगे तो ठीक होगा ।

इस तिथी पत्र को देखने की रीति यह है ।

पछिले खाने में रविचार लग रहा है यह प्रथम पुग का खाना है. इसी खाने को पाच साल के बाट पास के अंत में बुधवार लग रहा है वहां तक देखना चाहिए इसी मनुष्यक मई जगज्जगें मभव १६७२ स १६७७ हादथुदी तक २ दूसरे खाने में बुधवार ने मभव १६७७ से १६८२ हादथुदी तक देखें फिर भीनरे खाने के बार में १६८२ से १६८७ हादथुदी तक और चौथे बार के खाने में १६८७ से १६९२ हादथुदी तक फिर पचमां बार के खाना में १६९२ में १६९७ हादथुदी तक और छठे बार के खाने में १६९७ से १७०२ हादथुदी तक फिर आठमों बार के खाने में १७०२ से १७०७ हादथुदी तक देखने चाहिये यह १५ वर्ष हुए है और पांच वगें पीछे फिर उपर में मभव बढलाना पढ़ता है और कुछ नहीं बढलता जैसा है वैसा ही रहता है, और इस पत्री में १ तिथी २ बार के मास लगाई गई है और नक्षत्र ३ कारण ४ दिनमान ५ गुरुपाम ही तारीख ६ क्रतु मान की तारीख ७ युग प्रमाण ८ मृषके गाय नक्षत्रों का जोग ९ और रात्रि

१८३० चन्द्रमा १७६८ नवत्रय १८३५ भाग चलते हैं इसी ही हिसाब से एक युग के १८३० दिन की गिनती आती है परन्तु जो वृत्त आतारों में लगता है वह इस गिनती में शामिल नहीं आया मालूम देता है क्योंकि चन्द्रपञ्चमि का प्रथम प्रभृतरु की प्रथमी प्रभृतिमा में कहा है कि जो मृग्य चन्द्रमा एक माहले से दूसरे माहले जाते हैं उस का नाम विरूपमान है ।

विकल्पेई विरुपावीत्ता इति वचनात् ।

जो वस्तु उस जगह में लगता है वह गोणता में है इस वास्ते पाच वर्षों में एक दिन अनुमान प्रमाण बदता मालूम देता है सो हम ने भी लगा दिया है क्योंकि बहुत दिनों से सुने थे कि एक दिन का फर्क रहता है सो वह यह ही फर्क था जो अब निकल गया और अन्य पंचाङ्गों में भी देखने में आता है कि वह दिनों की गिनती को अहर्ण गणने नाम से लगाते हैं सा वह भी देखा गया तो पाच वर्षों के १८३१ दिन ही लगाते हैं, सो इस दिन का फर्क निकलजाने से युग का प्रमाण भी ठीक मिलता है, और पत्नी का प्रमाण चन्द्रपञ्चमि के द्वादश वा प्रभृतरु में १४ दिन २२ सुहूर्त १२ भाग का लिखा है जिसके सुहूर्त ४४२ भाग ५३ होते हैं और एक मास के ८८५ सुहूर्त ५३ भाग होते हैं और कोई तर्क करके आपने वीरसम्बत् २४५३ माह आठमास लिखे हैं और पत्नी में २४४१ से थुल किया है सो क्या कारण सो भाई साहिब इसका कारण सिर्फ यह ही है कि अभी तक इसका प्रचार नहीं है इस वास्ते प्रचलित सम्भव है वह ही लगाया है इसका खुलामा उपर लिख चुक है और १५ सालका यह तिथी पत्रका छपचुका है सो पंडित जन मूर्खों के साथ मिल के देख लेंगे ॥

और चन्द्रमा उदयी मिलता मालूम देता है, और रात्रि पूर्ण कर्ता नवत्रय भी ठीक मालूम देते हैं परन्तु इतना ख्याल रखना चाहिये कि अब दक्षिणायण है वा उत्तरायण है, क्योंकि दक्षिणायण उत्तरायण का फरक रहता है, जैसे कि प्रगतिरा और पौष मास में चन्द्रमा पूर्णमासी को रात अनुमान ३४ घड़ीया ३५ घड़ी की होती है, और उस दिन प्रगतिर नवत्रय को प्रगतिर की पूर्णमासी पूर्ण करनी है, पुष्य को पौषी पूर्ण करनी है, यह बाहरेल माहले रह करके पूर्णमासी

समाया योग में फटा है तत्रपाठ, समये, भगवं, महावीरे, वासाणं सवीसति, रायणा से, वीतिकले, सचरीए, राई दिण्हें, सेसोई, वासावासंपझां सवेति, इतिवचनात्, अब देखीये कि इस पाठ ने तो जाहिर कर दिया के पहले ५० दिन और पीछे सत्तर दिन से श्राद्ध है परन्तु पहले ५० दिन पीछे १०० दिन या पहले ८० दिन पीछे ७० दिन यह सूत्रों में कहीं भी विवर्णन नहीं है इस वास्ते चौमासा चार ही मास का होना चाहिए क्योंकि जैन सूत्रों के हिमाच से चौमासा में लौद नहीं आता इस का तुलासा ऊपर देख लेना जैन सूत्रों में तो पोष और आपाढ़ दो ही मास अधिक होते हैं और नहीं इसलिए ४ मास का ही चौमासा होना संभव है और भी एक बात आपको दिखलाना जरूरी समझते हैं वह यह है कि कितने एक मुनी महाराज चौप की सम्कसरी करते हैं और कोई पंचमी की कोई छठ की भी कर लेते हैं तो यह गढ़बढ़ जब ही भिद सकती है कि सर्व मुनी महाराज वा श्रावकजन इस पत्री के अनुसार ही करे क्योंकि यह पत्री बिल्कुल सूत्रों के साथ ही तैयार की है तो आप खुद सूत्रों के पाठके साथ मिला के निश्चय कर लेवेंगे और इसमें भी कोई सूत्रों के अर्थना है की सूत्रों के अनुसार ही सर्व धर्म फार्य करने चाहिए और हमें आशा है कि आप इसके मुताबिक ही करेंगे और इसमें कोई छटि दोष या भूल रह गई हो तो बुध जन सुधार कर लेवें ॥

इति शुभं भवतुः—



पूर्ण कर्त्ता नन्दन १० पोरसी की छाया प्रमाण ११ चन्द्रायण प्रमाण १२ शंक्रांति लगने का प्रमाण १३ और असहाइ टालने का प्रमाण १४ सम्बत्तसरी प्रमाण
 इत्यादि प्रमाण इन पन्नी में लगाया है, और कोई पूजा करे की इसमें ग्रह नहीं लगाये गये तो इसके उत्तर में निर्दिष्ट यह है कि ग्रहों की चाल का खुलासा पुरी
 तोर से मन्त्रों में नहीं है क्योंकि बहुत से मन्त्र ग्रंथ रिछेद हाथेय हैं उनमें वर्णन होगा परन्तु अभि इनमें खुलासा नहीं है इस वास्ते नहीं लगाये और चन्द्रमा सूर्य के ग्रहण
 की संभव पर लगने देखा गया है, परन्तु लगने का अस्थान नहीं पिला इस वास्ते नहीं लगाये गये और इसकी कोई साधुओं को जबरन भी नहीं है, जबरन तो तिथी
 पत्नी चौमासी सम्बत्तसरी चौरा की है तो वही कुछ करके त्पार किया है, तो समस्त जैन मुनिपहारानों को वह श्रावक जनों को इसके मुनव पत्नी, चौमास, सम्बत्तसरी,
 असहाइ टालनी इत्यादि धर्म फार्ज करने चाहिये और पोरसी की छाया का मापना भी इसीके अनुसार करना चाहिये यदि सूर्यो से कोई नुना अधिका हो तो दुय जन
 सुधार करलेवे और शांति प्राप्त से विचार करें अगर कोई भूल हो तो खबर देवे और कोई दृष्टी दोष रह गई हो तो पिछापी दुकद वषोंकि छद्मस्त भूल फाटाव है
 इनी गुणी जन न्या करले वले आवे हैं ओ शांति शांति भवतु ।

अब हमारे मुह जैन मीय बुधुओं इस संप्रति काल में जैन सूर्यो के अनुसार तिथी पत्रका न होने के कारण से बहुत से फार्ज आजकल धर्म सक्थी जो
 हो रहे हैं वह फार्ज सूर्यो से बिहद से मालूम देते हैं, इसलिये पुनः प्रार्थना है कि अब सर्व जैन सूर्यो के अनुसार ही होना चाहिये क्योंकि इस वक्त कई मुनिपहारान तो
 उदय ठियो मानते हैं और कितने ही अस्त तिथी को मानते हैं, और बहुत मुनी महाराज वा श्रावकजन ५० दिन में सम्बत्तसरी करते हैं, और कितने ही जब अम्यमत
 के पंचाङ्गो में अधिक मास, (लोद) चौमासा में आ जाता है तब ८० दिन में सम्बत्तसरी करते हैं, और कोई मुनिपहारान सम्बत्तसरी के ९० दिन बाद बिहार
 करते हैं, माने चौमासा उठने हैं और कई सम्बत्तसरी तो ५० भेदिन कर लेते हैं पान्नु पीछे १०० दिन बाद चौमासा उठते हैं तो मीय पिय वसे मन्त्र में तो ५०
 में दिन सम्बत्तसरी करनी कही है और सम्बत्तसरी के ७० दिन पीछे चौमासा उठना कहा है तो आपकी सेवा में प्रमाण भी दिया जाता है खत्र श्रीमन्नायग के ७० में

शुद्धि पत्र ।

हमारे पाठकगणों अवल इस शुद्धि पत्र को ख्याल में ले के पीछे सुधार के साथ इस तिथी पत्रका को पतनपूर्वक पढ़ने की कृपा कीजिये ।

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
|-------|--------|--|---|
| ६ | ८ | मुहुत्से ६ | मुहुत्से |
| ७ | १ | गोर | परि |
| ७ | ३ | मुरविशंत | चतुरविशंति |
| २ | ६ | पत्रि में शुद्धाशुद्धि २ पग ३ आः छाः पो | ए हसतमी पंक्ति चाहिए २ पगः ३ आः छाः कोलव २ । ५६ गर १ । ५८ घार बु घारः मे |
| २ | १ | कोलव १ । ५६ | |
| ६ | २ | गरः २ ५८ | |
| १० | १ | गाद नही लाग | |
| १३ | १ | घारः २ | |
| १६ | ८ | ५८॥मःउः मिथुनेंदु | ५८॥मःउः मिथुनेंदु |
| २६ | ६ | पुष्पाकें १८ छाः उः | पुष्पाकेंः ४८ घः उः |
| २८ | ११ | उत्रापादाः ४२ । ६० | उत्रापादाः ४२ । ६ |

| पंक्ति | पृष्ठ | अशुद्धि | शुद्धि |
|--------|-------|---------|---------------|
| ५ | २८ | ५ | शुद्धि |
| ६ | | ६ | कोलव |
| ७ | | ७ | गर |
| ८ | | ८ | घालव |
| ९ | | ९ | खीलोचन |
| १० | | १० | विण्णिज |
| ११ | | ११ | घव |
| १२ | | १२ | कोलव |
| १३ | | १३ | गर |
| १४ | | १४ | घृष्टि |
| १५ | | १५ | वालव |
| १६ | | १६ | साठे १८ |
| १७ | | १७ | पुर्वाफल्युणी |
| १८ | | १८ | उत्राफल्युणी |

चन्द्रमा २ दिन २८
पुर्वापादा
उत्रापादा

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि | पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
|-------|--------|----------------------|------------------------|-------|----------------|-------------------------------------|---------------------------------|
| ४४ | ७ | | चन्द्रायण ४७ | ८२ | ६ | | शुद्धि |
| ४५ | ८ | | ५३॥ मा.उ कृमेदु | ८२ | ७ | पुर्वाफा: | पुर्वापाडा |
| ४८ | ७ | ५३ मा उ कृमेदु | आद्राडके ६ दिन ४२ घड़ी | ६० | १२ | उत्रा फा: | उत्रापाडा |
| ५२ | १० | आद्राडके ६ दिन २४ घः | सिद्धिभालु शंकांति | ६१ | ३ | ३ पः ६ घः द्यः पो: | ३ पः ६ घः द्यः मघा समासरात्रिका |
| ५६ | १ | सिद्धिभालु शंकांति | घः भाग | ६२ | १० | चित्रा २१। १३ | विघा २१। ३३ स्वाति ३० |
| | | | ४०। ४० चित्रा | ६२ | २ | रेयतिडके १३ दि ४२ | रेयतिडके १३ दिः २४ घः |
| ६१ | १४ | पत्नी ६२ | पत्नी ६१ | १०६ | २ | तुलेंदु | तुलेंदुः चन्द्रदर्शन |
| ६४ | ३ | पुर्वापाडा | पुर्वाभाद्रपदा | १०८ | १५ | ज्येष्ठा डके ६ दिन २४ घः | ज्येष्ठाडके ६ दिन ४२ घड़ी |
| ६४ | ४ | उत्रापाडा | उत्राभाद्रपदा | ११६ | १५ | दिनमान १३। १३ | दिनमाः ३१। १३ |
| ७१ | १ | घः भाः | घः भाः | १२३ | १२ | दिनमाः ३५। ५४ | ३४। ५४ |
| | | २६ | २ ५६ | १२३ | १३ | दिनमानः २४। ६८ | ३४। ५८ |
| ७१ | २ | १८ | १ ५८ | | | पिछले पृष्ठ की शुद्धा शुद्धि | |
| ८१ | उपर ही | विक्रमः १६७ | विक्रम १६७५ | १ | २५ | अमम मुहूर्त नहीं जगा सो जगावो | |
| ८१ | | | | २ | अशुद्ध | शुद्ध | |
| | | | | | एक घंटे (कालक) | एक घंटा (कालक) | |

और इसमें बापे की बहुत अशुद्धियां रह गई हैं सो पाठक जन सुधार के पढ़ें इति ।

इसी तरह अनुक्रम में मिलता चला जावेगा ।

लोकीक मास आयण इस पत्री में देखना हो तो ५ कोटा चारों का देखो जैसे लोकीक १६७२ श्रावणचदरी १ मंगलवार है तो इसी पत्री में भी श्रावण चदरी १ मंगलवार मिलेगी तियो घटने बढ़ने के कारण सियात एक चार घंटे बढ़े तो आगे मिल जायगा ऐसा मान्नुम देता है जो अधिक मास हो तो दूसरे से मेलना ॥

५
लोकोत्तर मास नाम । प्रीतिवर्धन । रघुदक्षिणायणे ।
कार्तिक । शुद्धि ।

चक्रमा २ दिन ६७ सोढ़े १८ भाग फलें । सूर्य के साथ नक्षत्र चन्द्रायन

[illegible]

विप्रेम सम्यग ६७२ लोकीक । धीर सम्यत २४४३ । गुणकामासि व । गहिलाचप्रेतनाउवनामसि व ।

[illegible]

चित्रम सम्यत् १६७३ लोकीक । वीर सम्यत् २४४२ । आया-वही १ । जुगयोमात् १३ । दूसरा चन्द्र सम्यत् सरकामास १ । आयाण वही । लोकोत्तरमासकामास अभिनन्द । रविउत्रायण ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सोदे | १८ भाग फलें | सूर्य के साथ नक्षत्र | १ चन्द्रायन |
|----------|-------|--------------------|-------------|----------------------------|-----------------------------|
| प्रमाण | २ | परगी प्रमाण | ३ | पोरमी क्षया प्रमाण | ४ |
| १ भागः | ३ | मकरेंदु | १८ | चन्द्रायन २६ | नक्षत्रमास १३ |
| २ भागः | ३ | मकरेंदु | १८ | २ पग १ अंः | क्षा पोरमी |
| ३ भागः | ३ | २३ भाग ३० कुंभेंदु | | | |
| ४ भागः | ३ | कुंभेंदु | | | |
| ५ भागः | ३ | ४२ भागः | मीतेंदु | अतुमास १२ | |
| ६ भागः | ३ | मीतेंदु | | | |
| ७ भागः | ३ | ६० भागः | ३ मंगल | पुनर्वसु ५८ | २४ घाः पुनर्व १३ दिः २४ घाः |
| ८ भागः | ३ | मंगल | | | |
| ९ भागः | ३ | १२ भागः | ३ बुध | पुर्वाषाढा समाप्त रात्रीका | |
| १० भागः | ३ | बुध | | | |
| ११ भागः | ३ | २ पग ३० | क्षा पोः | सूर्यमास १२ | १ उत्रायणा रात्री |
| १२ भागः | ३ | ० | ० | ० | ० |
| १३ भागः | ३ | ३० भागः | ३ मिथुन | ३ फलेंदु | ३ फलेंदु |
| १४ भागः | ३ | ३० भागः | ३ मिथुन | ३ फलेंदु | ३ फलेंदु |
| १५ भागः | ३ | ३० भागः | ३ मिथुन | ३ फलेंदु | ३ फलेंदु |

चित्रम सम्यत् १६७३ लोकीक । वीर सम्यत् २४४२ । आया-वही १ । जुगयोमात् १३ । दूसरा चन्द्र सम्यत् सरकामास १ । आयाण वही । लोकोत्तरमासकामास अभिनन्द । रविउत्रायण ।

| १२ विक्रम सम्वत् १९७३ लोकीक । वीर समयत् २४४२ । जुगकामास १२ । पहला चन्द्र सम्बत्तरका मास १२ । आप.दुवरी । लोकोत्तर मास नाम वनवियोत्र रविउवाणो ॥ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | | | | | | | | | | | |
|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

विक्रम सम्पत् १९७३ लोकीक । वीर सम्पत् २४४२ । सुगणमास १३ । वृत्तगवद्रसव्यसर्गोमास १ । श्रावणसुदी । लोकोत्तरमासकानाम अभिन्द । रविदक्षिणायणे ।

| चन्द्रमास | दिन | ६७ | सूर्य के साथ नक्षत्र | १ | पक्षी प्रमाण | ३ |
|---|----------------|------|----------------------|------|--------------|------|
| साठे १८ भाग फर्से । | चन्द्राणप्रमाण | २ । | पोरसीकाः प्रमाण | ४ । | | |
| कक्रेडु | ४३७० | ४३७० | ४३७० | ४३७० | ४३७० | ४३७० |
| कक्रेडु । चन्द्रवर्धनम् | ४३७१ | ४३७१ | ४३७१ | ४३७१ | ४३७१ | ४३७१ |
| ॥ भा उः सिधेडु | ४३७२ | ४३७२ | ४३७२ | ४३७२ | ४३७२ | ४३७२ |
| सिधेडु २ पग १ काः काः पोरसी | ४३७३ | ४३७३ | ४३७३ | ४३७३ | ४३७३ | ४३७३ |
| १९ भाः ॥ कन्येडु | ४३७४ | ४३७४ | ४३७४ | ४३७४ | ४३७४ | ४३७४ |
| कन्येडु । पुण्याके १८ घ उः स्लेपाके ६ दिन ४२ घड़ी | ४३७५ | ४३७५ | ४३७५ | ४३७५ | ४३७५ | ४३७५ |
| ३७ भाः उः तुलेडु | ४३७६ | ४३७६ | ४३७६ | ४३७६ | ४३७६ | ४३७६ |
| तुलेडु | ४३७७ | ४३७७ | ४३७७ | ४३७७ | ४३७७ | ४३७७ |
| ५६ भाः उः वृक्षकंडु | ४३७८ | ४३७८ | ४३७८ | ४३७८ | ४३७८ | ४३७८ |
| वृक्षकंडु | ४३७९ | ४३७९ | ४३७९ | ४३७९ | ४३७९ | ४३७९ |
| वृक्षकंडु । उत्रापाढा समाप्त रात्रीका | ४३८० | ४३८० | ४३८० | ४३८० | ४३८० | ४३८० |
| ॥ भा उः धनेडु | ४३८१ | ४३८१ | ४३८१ | ४३८१ | ४३८१ | ४३८१ |
| धनेडु । ५९ स्लेया ५६ ३० घ उः माता ५६ १३ दि २४ घ | ४३८२ | ४३८२ | ४३८२ | ४३८२ | ४३८२ | ४३८२ |
| २६ भाः उः मक्रेडु । नक्षत्रमास १४ । चन्द्रायन २८ उत्रायणे | ४३८३ | ४३८३ | ४३८३ | ४३८३ | ४३८३ | ४३८३ |
| मक्रेडु । पक्षी २६ | ४३८४ | ४३८४ | ४३८४ | ४३८४ | ४३८४ | ४३८४ |

विषम सम्यत् १६७३ लोरीक । वीर सम्यत् २४४२ । दुसरा चन्द्रसम्बत्सरका माम ३ । आसीज सुदी । लोकोत्तरमासनाम । विजय । रविदक्षिणायणे ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सादे | १८ भाग | फले । सूर्य के साथ नक्षत्र ? चन्द्रायन |
|--|-------|---------|--------|--|
| प्रमाण २ । पक्षी प्रमाण ३ पोरसी क्षया प्रमाण ४ | | | | |
| कन्येदु । ३ फाः ५६ २४ घः ३ । हस्तार्के १३ दि० २४ घड़ी | | | | |
| कन्येदु । चन्द्रदर्शनम् | | | | |
| १२।भा.३ तुलेंदु | | | | |
| तुलेंदु | | | | |
| ३१ भागः वृश्चिकेदु | | | | |
| वृश्चिकेदु । २ गप ६ धंः क्षयापोरसी | | | | |
| ४१। भा.३ धनंदु | | | | |
| धनंदु | | | | |
| धनंदु | | | | |
| २ भा.३ मर्कट नक्षत्रमास १६ । चन्द्रायन ३२ | | | | |
| मर्कट | | | | |
| ११। भा.३ कर्मेदु | | | | |
| कर्मेदु । उत्राभादूयदा समासयत्रीका | | | | |
| ३८ नाः ३ः मीनेहु। हस्तार्के ४८ घः ३ः वित्राङ्के १३ दि २४। २ पग १ धंः | | | | |
| मीनेहु । पक्षी ३० | | | | |
| ३० ५८ २३ १६ ४४ ३ | | | | |
| ३१ ५८ १० ३६ ३० | | | | |
| ३१ ५४ ११ ४४ ३१ | | | | |
| ३१ ५४ १२ ५४ ३२ | | | | |
| ३१ ५४ १३ ५४ ३३ | | | | |
| ३१ ५४ १४ ५४ ३४ | | | | |
| ३१ ५४ १५ ५४ ३५ | | | | |
| ३१ ५४ १६ ५४ ३६ | | | | |
| ३१ ५४ १७ ५४ ३७ | | | | |
| ३१ ५४ १८ ५४ ३८ | | | | |
| ३१ ५४ १९ ५४ ३९ | | | | |
| ३१ ५४ २० ५४ ४० | | | | |
| ३१ ५४ २१ ५४ ४१ | | | | |
| ३१ ५४ २२ ५४ ४२ | | | | |
| ३१ ५४ २३ ५४ ४३ | | | | |
| ३१ ५४ २४ ५४ ४४ | | | | |
| ३१ ५४ २५ ५४ ४५ | | | | |
| ३१ ५४ २६ ५४ ४६ | | | | |
| ३१ ५४ २७ ५४ ४७ | | | | |
| ३१ ५४ २८ ५४ ४८ | | | | |
| ३१ ५४ २९ ५४ ४९ | | | | |
| ३१ ५४ ३० ५४ ५० | | | | |
| ३१ ५४ ३१ ५४ ५१ | | | | |
| ३१ ५४ ३२ ५४ ५२ | | | | |
| ३१ ५४ ३३ ५४ ५३ | | | | |
| ३१ ५४ ३४ ५४ ५४ | | | | |
| ३१ ५४ ३५ ५४ ५५ | | | | |
| ३१ ५४ ३६ ५४ ५६ | | | | |
| ३१ ५४ ३७ ५४ ५७ | | | | |
| ३१ ५४ ३८ ५४ ५८ | | | | |
| ३१ ५४ ३९ ५४ ५९ | | | | |
| ३१ ५४ ४० ५४ ६० | | | | |
| ३१ ५४ ४१ ५४ ६१ | | | | |
| ३१ ५४ ४२ ५४ ६२ | | | | |
| ३१ ५४ ४३ ५४ ६३ | | | | |
| ३१ ५४ ४४ ५४ ६४ | | | | |
| ३१ ५४ ४५ ५४ ६५ | | | | |
| ३१ ५४ ४६ ५४ ६६ | | | | |
| ३१ ५४ ४७ ५४ ६७ | | | | |
| ३१ ५४ ४८ ५४ ६८ | | | | |
| ३१ ५४ ४९ ५४ ६९ | | | | |
| ३१ ५४ ५० ५४ ७० | | | | |
| ३१ ५४ ५१ ५४ ७१ | | | | |
| ३१ ५४ ५२ ५४ ७२ | | | | |
| ३१ ५४ ५३ ५४ ७३ | | | | |
| ३१ ५४ ५४ ५४ ७४ | | | | |
| ३१ ५४ ५५ ५४ ७५ | | | | |
| ३१ ५४ ५६ ५४ ७६ | | | | |
| ३१ ५४ ५७ ५४ ७७ | | | | |
| ३१ ५४ ५८ ५४ ७८ | | | | |
| ३१ ५४ ५९ ५४ ७९ | | | | |
| ३१ ५४ ६० ५४ ८० | | | | |
| ३१ ५४ ६१ ५४ ८१ | | | | |
| ३१ ५४ ६२ ५४ ८२ | | | | |
| ३१ ५४ ६३ ५४ ८३ | | | | |
| ३१ ५४ ६४ ५४ ८४ | | | | |
| ३१ ५४ ६५ ५४ ८५ | | | | |
| ३१ ५४ ६६ ५४ ८६ | | | | |
| ३१ ५४ ६७ ५४ ८७ | | | | |
| ३१ ५४ ६८ ५४ ८८ | | | | |
| ३१ ५४ ६९ ५४ ८९ | | | | |
| ३१ ५४ ७० ५४ ९० | | | | |
| ३१ ५४ ७१ ५४ ९१ | | | | |
| ३१ ५४ ७२ ५४ ९२ | | | | |
| ३१ ५४ ७३ ५४ ९३ | | | | |
| ३१ ५४ ७४ ५४ ९४ | | | | |
| ३१ ५४ ७५ ५४ ९५ | | | | |
| ३१ ५४ ७६ ५४ ९६ | | | | |
| ३१ ५४ ७७ ५४ ९७ | | | | |
| ३१ ५४ ७८ ५४ ९८ | | | | |
| ३१ ५४ ७९ ५४ ९९ | | | | |
| ३१ ५४ ८० ५४ १०० | | | | |

३४)
 १८ । इत्या चन्द्रसन्वत्सरेमास ६ । पोष्यदी । लां हांयमासनाम । शिवं । रविदक्षिणायणे ॥

चन्द्रमा - दिन ६७ मटे ६ भाग फेले। सूर्य के साथ नक्षत्र १ चन्द्रायन प्रमाण २। पृथ्वी प्रमाण ३। पॉलीट्रिया प्रमाण ४।

मसुदा । अथंष्टाऽर्कद्वयः ३. मूलाऽर्क ३२ दि २५ घ । ३ पण १ अं ० छ ० पो ०

१॥ मा ३: मियुनेवु

સિંહુનેત્રુ । અંદાયાન ૩૭

२० भा ३: २०

新書

३८॥भा:उ: सिंघेदु

सिध्दन्तु

सन्ताने
इतिमात्रः कल्पयन् । अपराधं हि । नृत्तुमाल १७

क० यं०

[illegible]

पुनः

२७५:

वृक्षकंदु । मूलाऽऽ

॥ भू॥ नमः

[illegible]

विगत सप्तत् १७३ लो० धीर मन्त्र २४४३। जुगमास १७। दस्य चन्द्र सप्तवर्कामान ४ सुगसर शुदी। लोकोत्रमास नाम भेमांस। रविदक्षिणायणे।

चन्द्रमा २ दिन ६७ सांठ १८ भागफलें। सूर्य के साथ नक्षत्र १।
चन्द्रायन प्रमाण २। पक्षी प्रमाण ३। पोरसी क्षाया प्रमाण ४।

चन्द्रचक्रेंदु। चन्द्रचक्रभागु गजान्ति। गजनेर्कोऽसक्ता इलगी। शरदम्बु
[चन्द्र दर्शनम्।

४३ भाउः मकरेंदु। नक्षत्रमास १८) चन्द्रायन ३६

कुम्भेंदु। ३ पग ४ आक्षायी पोरसी
कुम्भेंदु। अयुषाधाऽकं २४ घःउः उर्वेष्टाऽकं ६ दि ४२ घड़ी

१३ भाउः मीनेंदु

मीनेंदु

३१॥ भाग ३ मंखेंदु

मंखेंदु

१० भाउः कुम्भेंदु

कुम्भेंदु

पक्षी ३४। कृत्तिका सप्तास रात्री का

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

२७४ २८१३३०१

विपन्न सम्यत् १६७३ लोकीक । वीर सम्यत् २४३३ । जुगनोमास २० । दूसरा चन्द्र सम्बत्सका मास ८ । फाल्गुणशायदी । लोकोत्तरमास नाम । हेमते । रविउज्जययो ॥

[illegible]

विभ्रम सम्यत् १६७३ लोकीक । गीर सम्वत् २४४३ । जुगकामास ७ । माघसुदी । लोकोत्तरमासकानाम शितिर रविदक्षिणायणे ।

[illegible]

विषम समयत् १६७३ जोर्षक । पीर समयत् २६५३ । दुर्गमासत् २० । वृषा चन्द्रसम्बन्धस्वरका मास ८ । फाल्गुण शुदी । लोकोत्तरमासनाम । हेमन्ते । रविउत्रायणे ।

| चन्द्रमा | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| चन्द्रमा | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | |
| १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | |
| १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | |
| १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | |
| १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | |
| १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | |
| १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २७ | २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २८ | २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| २९ | ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ३० | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

चन्द्रमा २ विन ६७ साहे १८ मास फलं । सुय के साथ नसत्र १ चन्द्रायन
प्रमाण २ । यस्वी प्रमाण ३ पोरसी क्षया प्रमाण ४

कुम्भेदु । अश्लेषा समाप्त रात्री या । चन्द्रद्वयानम
कुम्भेदु । ३ पः ८ अक्षः । सुयमास १६ । मघा रात्रीका
३ माः ३ मीनेदु । धनेष्टाङ्के ६० घ.
मीनेदु । कुम्भेदु शंकाति । धनेष्टाङ्के ६० घ.
२७॥ माः ३ मेनेदु । सतमियाङ्के ६ विन ४२ घड़ी
मेनेदु
४६ माः ३ दूनेदु
दूनेदु
६७ माः ३ मियुनेदु
मियुनेदु । ३ पण ७ अंः क्षयापोरसी
मियुनेदु । सतङ्के ४२ घः ३ पुरवाभाङ्के १३ दिन २४ घड़ी । चन्द्रायन ४३ ।
६ माः ३ कनेदु
कनेदु
३७ माः ३ सिनेदु । पञ्चो ४०
सिनेदु

हंमते । गघिउग्रायणे ।

[illegible]

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|----|----|----|---|----|--------|----------|------|--------------|------|-------------|--------|----------|
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ११२५६ | गतमि० | २३५६ | किस्तुघन | ३२४ | वय | २५५७७ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | २११५८ | पुः माः | २३५६ | वालव | २२६ | कोलय | २२६५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ३३०६० | उः माः | ५३५६ | स्त्री लोचन | १२८ | गर | २२६५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ४३०० | रेवती | ५३५६ | विशिज घृष्टि | २१३१ | पाग | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ५३१० | उदितली | ५३५६ | वालव | ५६ | कोलय | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ६३५७ | मण्णी | ५३५६ | स्त्रीलोचन | २८ | गर | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ७३७ | हृत्तिका | ५३५६ | विशिज | २७ | घृष्टि | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ८३६ | रोहिणी | ५३५६ | वय | २६ | वालव | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ९३१० | मृगशिरा | ५३५६ | कोलय | २५ | स्त्री लोचन | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | १०३५१२ | आर्द्रा | ५३५६ | गर | २४ | विशिज | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | ११३३१५ | पुनर्वसु | ५३५६ | घृष्टि | २३ | वय | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | १२३२१६ | पुष्य | ५३५६ | वालव | २२ | कोलय | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | १३३११८ | उत्तराषा | ५३५६ | स्त्रीलोचन | २१ | गर | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | १४३२० | मघा | ५३५६ | विशिज | २० | घृष्टि | २३०५७८ | कुम्भेडु |
| ग | न | मं | हृ | वृ | र | पु | १५३२२ | पूर्वाषा | ५३५६ | वय | १९ | वालव | २३०५७८ | कुम्भेडु |

विष्णु सम्भत् १६७३ लोकीक । वीर सम्भत् २४४३ । जुगकामास २१ दूसराचंद्र समाप्तरनामास ६ । चंद्र शुद्धी लोकोत्तरमासको नाम । वंसन । वंसन । शवित्रशयणे ॥

चन्द्राः दो दिन ६७ सांठे १८ भागफलें ॥ सूर्य के साथ नक्षत्र १

[illegible]

विप्रम सस्यत् १६७४ लोफ्रीक । वीरसस्यत् २४४३ । जुगकामस २४ । दुसराचन्द्रसम्बतमरकामस १२ । आयादुदुदी । लोफोत्तरमासनाम । वनविरोध । रविउज्जायणे

चन्द्रमा २ दिन ६७ साठे १८ भाग फरसे। सूर्य के साथ नक्षत्र १
खग्रायन प्रमाण २ पक्षीप्रमाण ३ पॉरसी छाया प्रणाम ४

[५०] दिन ६ घण्टी

विक्रम सम्यत् १६७७ लोहीरु । वीर सम्बत् २४४३ । जगन्नामास २८ । तीसरा अभिवर्धन साग्नसारकामास ४ कार्ष्णिहवदी । लोकोत्सामासनाम । प्रतिवर्धन । गधि दत्तगणायणे

[illegible]

विक्रम सम्यत् १९७४ लोकीक । वीरलभ्यत् २४४४ जुगकामाल ३० । नीसग अमीधर्धन सम्भत्सकामास ६ । पोय घदी । लोकोजमास नाम । सिय । प्रथम । रघिदक्षणायाणे ।

[illegible]

विक्रम सम्वत् १९७४ लोभिक । पीर मध्वत् २४४४ । तुंगरामान ३१ । तीसरा अभीवर्धन सप्तदशरका मास ७ । अधिकमास पौष यवी । जोकोत्तर मास नाम । शिव । रघुदत्तनाथाय ॥

| चंद्रमा | २ दिन | ६७ सांठे | १८ भागफलें । सूर्य के साथ मलत्र १ |
|---------------------|-----------------------------------|--------------|--|
| चन्द्रायन | प्रमाण २ । पत्नी प्रमाण ३ । पोरसी | छायाप्रमाण ४ | |
| मिथुन | २४ ५१ १७ | ३ ८८७ | ४६ भा. ३. कर्केतु । चन्द्रायन ६४ वत्सनायण |
| ४६ भा. ३. कर्केतु | २४ ५७ १८ | ४ ८८८ | फर्केतु |
| ६४ भा. ३. सिंघे | २४ ५३ १४ | ५ ८८९ | ६४ भा. ३. सिंघे |
| ३ पग १ संख्यायोरसी | २४ ३६ २० | ६ ८९० | सिंघे ३ । ३ पग १ संख्यायोरसी |
| सिंघे | २४ ३३ २१ | ७ ८९१ | सिंघे |
| १६ भा. ३. कर्केतु | २४ ३१ २२ | ८ ८९२ | १६ भा. ३. कर्केतु |
| कर्केतु | २४ २७ २३ | ९ ८९३ | कर्केतु |
| ३४ भा. ३. तुलें | २४ २३ २४ | १० ८९४ | ३४ भा. ३. तुलें । पूर्वायाहा ५४ घा. उः उत्रायाहा ५८ के २० दिन ६ घा |
| तुलें | २४ १९ २५ | ११ ८९५ | तुलें |
| ५३ भा. ३. वृश्चकेतु | २४ १५ २६ | १२ ८९६ | ५३ भा. ३. वृश्चकेतु |
| वृश्चकेतु | २४ ११ २७ | १३ ८९७ | वृश्चकेतु |
| ३ पग १ संख्यायोरसी | २४ ७ २८ | १४ ८९८ | ३ पग १ संख्यायोरसी । ३ पग १ संख्यायोरसी |
| ३ पग १ संख्यायोरसी | २४ ३ २९ | १५ ८९९ | ३ पग १ संख्यायोरसी । ३ पग १ संख्यायोरसी |
| ५४ भा. ३. धन | २४ ० ३० | १६ ९०० | ५४ भा. ३. धन । अतुमास ३० । पत्नी ६२ |
| धन | २४ ० ३१ | १७ ९०१ | धन |

[illegible]

| चन्द्रमा २ दिन ६७ | सूर्य के साथ नक्षत्र १ पक्षी प्रमाण ३ | सांकेतिक भाग फलें । | चन्द्राण्यप्रमाण २ । गोरसीद्धाः प्रमाण ४ । |
|---|---------------------------------------|---------------------|--|
| सिंह ३३ । धने ५६० घः । कुंभे ५६० । शंक्रांति | १६४६ | २६६ | २६६ |
| १८ भाः ३० कन्ये ३३ । सतभिगा ५६६ दिन ४२ वदी | २६४७ | २६६ | २६६ |
| कन्ये ३३ | २६४८ | २६६ | २६६ |
| कन्ये ३३ | २६४९ | २६६ | २६६ |
| १॥ भाः ३३ तुले ३३ | २६५० | २६६ | २६६ |
| तुले ३३ | २६५१ | २६६ | २६६ |
| २८ भाः ३३ वृश्चिके ३३ | २६५२ | २६६ | २६६ |
| वृश्चिके ३३ । सतभिगा ५६६ ४२ घः ३३ पुः भाः ५६६ ३३ दिः २४ घाः ३३ पग ७३३ छाः | २६५३ | २६६ | २६६ |
| ४६॥ भाः ३३ धने ३३ | २६५४ | २६६ | २६६ |
| धने ३३ | २६५५ | २६६ | २६६ |
| ६५ भाः ३३ मकरे ३३ । नक्षत्रमास ३३ । चन्द्रायन ७० उत्रायणे | २६५६ | २६६ | २६६ |
| मकरे ३३ | २६५७ | २६६ | २६६ |
| मकरे ३३ | २६५८ | २६६ | २६६ |
| १६॥ भाः ३३ कुंभे ३३ । पक्षी ६५ | २६५९ | २६६ | २६६ |
| कुंभे ३३ । ३ पग ६३ भाः । अतुमास ३३ मास समसतरादीका | २६६० | २६६ | २६६ |

विषम समयम् १६७५ लोकीक । गीरस्यत् २४४४ । जुगफामांत इदं । नीलरागाभिर्धनस्यसरफाकामात १२ । ज्येष्ठदी । श्लोकान्नमासनम् । निदाह । रशिउन्नायणे ।

चन्द्रमा २ दिन ६७ सते १८ भाग फरसे। सूर्य के साथ नक्षत्र १
चन्द्रायन ममाग २ गंटीममाग ३ पोरसी छाया ममाग ४

[illegible]

विष्णुसंस्कृत १६७७ लोकीक । गीरसंस्कृत २४४४ । जुगकाभास ३८ । लोकाया चन्द्रसंस्कृतका भास १ । श्रवणयदी । लोकोत्तरभासनाम । अभिनेदे । रविदक्षिणायणे ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सङ्के | १८ भाग | कसे । सूर्य के साथ नक्षत्र १ चन्द्रायन |
|--|-------|----------|--------|--|
| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सङ्के | १८ भाग | कसे । सूर्य के साथ नक्षत्र १ चन्द्रायन |
| प्रमाण २ । पक्षी प्रमाण ३ पोरसी छाया प्रमाण ४ | | | | |
| मकरेंदु । पुनर्वसु ५८ २४ घः पुरक ५८ १३ दिः २४ घड़ी | | | | |
| २४ भागः उः कुम्भेंदु | | | | |
| कुम्भेंदु | | | | |
| कुम्भेंदु । पूर्वाषाढा समाप्त रात्रीका | | | | |
| ६ भाः उः मीनेषु । २ पगः जाः सूर्यमास ३६ । उज्ज्याया रात्रीका | | | | |
| मीनेषु । कर्कें मातुश्रुक्ती रविदक्षिणायणे । पावसम्प्रातः । गर्जनेकी ५८ सभासनी | | | | |
| २४ भागः उः मेखेंदु | | | | |
| मेखेंदु | | | | |
| ४३ भाः उः वृषेंदु | | | | |
| वृषेंदु | | | | |
| ६१॥ भाः उः मिथुनेदु | | | | |
| मिथुनेदु २ पग १ अंः क्षः | | | | |
| मिथुनेदु चन्द्रायन ८१ दक्षिणायणे | | | | |
| १३ भाः कर्केंदु । पुण्ड्र ५८ घः उः ५८ सङ्के ५८ दिः ४२ घः पक्षी ७४ | | | | |

द्विष्टम सम्यत् १६७५ लोकीक । धीर सम्यत् २५४४ । युगकामास ३७ । तीसरा अभिवर्धन सम्बत्सरका मास १३ । आषाढ़ शुदि । लोकोत्तरमास नाम । घनविरोध । रविउन्नायणे ॥

[illegible]

यिन्नाम ताम्यत् १६५ लोहीरु । पोर सम्यत् २५४४ । जुगनामास ३८ । चौथा सम्यत्सका मास १ । अथवा शुदी । जोकोत्तामास नाम । अभिनेंद्र । रविदत्तणायणो ॥

चंद्रमा २ दिन ६७ साते/प्रागफले । सूर्य के साथ नक्षत्र १
चन्द्रायन प्रमाण २ । पत्नी प्रमाण ३ । पोसी छायाप्रमाण ४

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|----|---|---|----|--------|----------|-----|---|------------|------|-------------|----|----|----|------|---|
| दुने | पु | र | ग | मे | १५०२० | उपेरां | २१ | ३ | किमुधन | २०५० | यव | ३५ | २१ | २० | ११०८ | ककेंदु |
| | पु | र | ग | मे | २५५२२ | मया | २१ | ३ | पावव | १६५२ | कोलव | ३५ | १७ | २६ | ११०६ | ३१॥भाःउः सिंघेदु । चन्द्रदर्शनम् |
| | पु | र | ग | मे | ३५०२५ | पूर्वाफा | २१ | ३ | स्त्रीलोचन | १०५५ | गर | ३५ | १३ | ३० | १११० | सिंघेदु । अतुमास ३७ |
| | पु | र | ग | मे | ४५७२६ | उयाफा | ५१ | ३ | विशिज | १७५६ | घुष्टि | ३५ | ६ | ११ | ११११ | ५० भाः उः कन्येंदु |
| | पु | र | ग | मे | ५५६२८ | हस्त | ५१ | ३ | यव | १६५८ | घालव | ३५ | ५ | २१ | १११२ | कन्येंदु । उयापाड़ा समाप्त रात्रीका |
| | पु | र | ग | मे | ६५५३० | चित्रा | ५१ | ३ | कोलव | १५६० | स्त्री लोचन | ३५ | १ | ३१ | १११३ | कन्येंदु २ पः २ अंः |
| | पु | र | ग | मे | ७५४३२ | स्वाती | २१ | ३ | गर | १५० | विशिज | ३५ | ५८ | ५१ | १११४ | १॥भाःउः तुलेंदु खेरा ३० पः उः मया उकें १३ दिन २५ घड़ी |
| | पु | र | ग | मे | ८५३३५ | विशाखा | ५१ | ३ | घुष्टि | १४० | यव | ३५ | ५५ | ५१ | १११५ | तुलेंदु |
| | पु | र | ग | मे | ९५२३६ | अनुराधा | ५१ | ३ | घालव | १३० | कोलव | ३५ | ५० | ६१ | १११६ | २० भाःउः घृष्मकेंदु |
| | पु | र | ग | मे | १०५१३० | ज्येष्ठा | २१ | ३ | स्त्रीलोचन | १२० | गर | ३५ | ५६ | ७१ | १११७ | घृष्मकेंदु |
| | पु | र | ग | मे | ११५०५० | मूला | २१ | ३ | विशिज | ११० | घुष्टि | ३५ | ५२ | ८१ | १११८ | ३० भाः उः घनेंदु |
| | पु | र | ग | मे | १२३६५२ | पूर्वाषा | २१ | ३ | यव | १०१० | घालव | ३५ | ३८ | ९१ | १११९ | घनेंदु । अभी न समाप्त रात्रीका |
| | पु | र | ग | मे | १३३८५४ | उयापाड़ा | ५१ | ३ | कोलव | ९१२ | स्त्री लोचन | ३५ | ३५ | १० | ११२० | ५७ भाः उः मकेंदु । २ पय ३ अंः क्षयाः |
| | पु | र | ग | मे | १४३७५६ | अभीच | ६५७ | ३ | गर | ८१४ | विशिज | ३५ | ३० | ११ | ११२१ | मकेंदु । नक्षत्रमास ४१ । चन्द्रायन ८२ उत्रायणे |
| दु | पु | र | ग | मे | १५३६५८ | आषाढ | २५७ | ३ | घुष्टि | ७१६ | यव | ३५ | २६ | १२ | ११२२ | मकेंदु । पक्षी ७६ |

विषय समय १६७४ लाकीक । धीरसम्यक् २४४४ । जुगकामास ४० । चौथे चन्द्र सम्यक्तरकामास ३ । आसौजवदी । लोकौत्तरमासनाम । विजय । रविदत्तयायगे ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सादे | १८ भाग | फसो मुर्य के साथ | नक्षत्र १ |
|--|----------|---------------|----------|------------------|-----------|
| चन्द्रायन | प्रमाण | २ पक्षीप्रमाण | ३ | गोरसी छाया | प्रमाण ४ |
| मीनेतु | ३२ २४ १३ | २४ २४ १३ | २४ २४ १३ | २४ २४ १३ | २४ २४ १३ |
| ६६॥ भाः मंखेतु | ३२ २० १४ | २६ २६ २६ | २६ २६ २६ | २६ २६ २६ | २६ २६ २६ |
| मेखेतु | ३२ १६ १४ | २७ २७ २७ | २७ २७ २७ | २७ २७ २७ | २७ २७ २७ |
| मेखेतु | ३२ १२ १६ | २८ २८ २८ | २८ २८ २८ | २८ २८ २८ | २८ २८ २८ |
| १८ भा उः मंखेतु | ३२ ८ १७ | २९ २९ २९ | २९ २९ २९ | २९ २९ २९ | २९ २९ २९ |
| मृखेतु । पूर्वाभाद्रपदा समाप्त रात्रीका | ३२ ३३ ३२ | ३० ३० ३० | ३० ३० ३० | ३० ३० ३० | ३० ३० ३० |
| ३६॥ भाः मियुनेतु । २ प न झंः छाः । सूर्यमास ३८ । उत्राभाद्रपदा | ३२ ३२ ३२ | ० १६ ३१ | ० १६ ३१ | ० १६ ३१ | ० १६ ३१ |
| मियुनेतु | ० ० ० ० | ० ० ० ० | ० ० ० ० | ० ० ० ० | ० ० ० ० |
| मियुनेतु । कन्याऽर्के शंकांती । वर्षा ऋतु २ | ३१ ५७ २० | १ ११ ६० | १ ११ ६० | १ ११ ६० | १ ११ ६० |
| ५४ भा उ फकैतु । उत्रा फाः ५ नें २४ घाः उ. हस्त ५ नें १३ दिनः २४ घड़ी | ३१ ५३ २१ | २१ १६ ११ | २१ १६ ११ | २१ १६ ११ | २१ १६ ११ |
| फकैतु | ३१ ४९ २२ | ३१ १६ १२ | ३१ १६ १२ | ३१ १६ १२ | ३१ १६ १२ |
| फकैतु | ३१ ४५ २३ | ४१ १६ १३ | ४१ १६ १३ | ४१ १६ १३ | ४१ १६ १३ |
| ६॥ भाः उ सिधेतु | ३१ ४१ २४ | ५१ १६ १४ | ५१ १६ १४ | ५१ १६ १४ | ५१ १६ १४ |
| सिधेतु | ३१ ३७ २५ | ६१ १६ १५ | ६१ १६ १५ | ६१ १६ १५ | ६१ १६ १५ |
| २४ भा. उ कर्म्येतु २ पा ६ झंः छा पत्तो ७६ | ३१ ३३ २६ | ७१ १६ १६ | ७१ १६ १६ | ७१ १६ १६ | ७१ १६ १६ |

विश्राम समयत् ११७४ लोकीक । धीरसम्बत् २४४४ जुगकामास ४० । चौथे चन्द्र सम्बत्कामास ३ । आसौजशुदी । लोकोत्रमास नाम । विजय । रविदत्तगाययो ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सादे | २८ भाग | कसे । सूर्य के साथ नक्षत्र १ । |
|-----------|------------------|------------------|--------|--------------------------------|
| चन्द्रायन | प्रमाण २ । पक्वी | प्रमाण ३ । पोरसी | छाया | प्रमाण ४ । |
| मं | दि | मं | दि | मं |
| ३१ | २६ | २७ | ८ | ११६७ |
| ३१ | २६ | २८ | ८ | ११६८ |
| ३१ | २६ | २९ | १० | ११६९ |
| ३१ | २७ | ३० | ११ | ११७० |
| ३१ | २७ | ३१ | १२ | ११७१ |
| ३१ | २८ | ३१ | १३ | ११७२ |
| ३१ | २८ | ३१ | १४ | ११७३ |
| ३१ | २८ | ३१ | १५ | ११७४ |
| ३० | २८ | ३१ | १६ | ११७५ |
| ३० | २८ | ३१ | १७ | ११७६ |
| ३० | २८ | ३१ | १८ | ११७७ |
| ३० | २८ | ३१ | १९ | ११७८ |
| ३० | २८ | ३१ | २० | ११७९ |
| ३० | २८ | ३१ | २१ | ११८० |
| ३० | २८ | ३१ | २२ | ११८१ |
| ३० | २८ | ३१ | २३ | ११८२ |
| ३० | २८ | ३१ | २४ | ११८३ |
| ३० | २८ | ३१ | २५ | ११८४ |
| ३० | २८ | ३१ | २६ | ११८५ |
| ३० | २८ | ३१ | २७ | ११८६ |
| ३० | २८ | ३१ | २८ | ११८७ |
| ३० | २८ | ३१ | २९ | ११८८ |
| ३० | २८ | ३१ | ३० | ११८९ |
| ३० | २८ | ३१ | ३१ | ११९० |

कन्यतु

४३।भा उः तुलैतु । चन्द्रदर्शनम्

तुलैतु

६२ भा उः धृक्केतु । मनुमान ३६

धृक्केतु

धृक्केतु

१३।भाःउ धर्मेतु । उत्राभाद्रपदा तमास राश्री का

धर्मेतु।हस्त४८घ३ उ ची३।५६१३दिन२४घ३।२पग १०घः।

३२ भा उः मकरं तु नक्षत्रमास ४३ चन्द्रायन ॥ ६ उत्रायणे

मकरं तु

५०। भाः उः कुम्भे तु

कुम्भे तु

कुम्भे तु

२ भाः उः मीने तु

मीने तु

२४ घः ११६। पक्वी ८०

(८७)

चन्द्रमा २ दिन ६७ सांठे १८ माग फर्से । सूर्य के साथ नसय १ चन्द्रायन
प्रमाण २ । पवली प्रमाण ३ पोस्सी छापा प्रमाण ४

चन्द्रमा २ दिन ६७ साह १८ माग फल । मय क साथ नसत
प्रमाण २ । पही प्रमाण ३ पोस्ती छाण प्रमाण ४

५ भा.३: कर्कट

कईद ! आता समाप्त रात्रीला

२३॥ माः३ः सिंघद । ३ एग ११ मंदा

सिंघानु

४२ भा: ३: पन्थेंतु

पञ्च

६०॥ भा.३: तुलैतु

107

पुलेंडु

१३ भा:३: वृक्षः । पुनर्धनुः समाप्त राजीका

वृक्षकैट । ४ पा छा सूर्यमास ४२ । उवायाद्वाऽर्कं ६० घः पुष्पराश्री ता

•

2011

[रयि उत्रायणे । हेमन्ते ऋतु

५६ भा.रा. म.सं. १। पृ. ८७

[illegible]

विष्णुन सम्यत् ११७५ लोकीरु । नीर समन् २५५५ । जुगकामाय ५३ । चौये चन्द्र सन्त्रमरका मास ६ । पोर शुदि । लोकोत्तमास नाम । शिव । गविदन्त्रिणायणे ॥

[illegible]

विषय सम्बन्ध १९७६ लोरीक। धीर समयत् २४४४। जुगकामास ४४। चौथे चन्द्र सम्बन्धकामास १०। वैशाख शुदी। लोकोत्तरमासनाम। कसमसंभव। रविउन्नायणे

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७सादे | १८माग | फले। सूर्य के साथ नक्षत्र १ |
|--|----------|---------------|-----------------------|-----------------------------|
| चन्द्रायन | प्रमाण २ | पक्षीप्रमाण ३ | पोरसी क्षाया प्रमाण ४ | |
| मेखेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| ५२ माः उः बुखेदु।। चन्द्रदर्शनम् | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| बुखेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| बुखेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| ३१ माः उः मियेनेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| मियेनेदु। अम्बिदिडेके ६० घः पुणे। चन्द्रदायन १०१। २ पः ११ अंश | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| २२ माः उः ककेदु। भरणीडेके ६ दिन ४२ घः ऋतुमास ४६ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| ककेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| ४० माः उः सिंघेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| सिंघेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| ५६ माः उः कन्येदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| कन्येदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| कन्येदु। भरणी ४२ घः उः कृत्तिकाडेके १३ दिन २४ घड़ी | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| १० माः उः तुलेदु। २ पण १० अंशः। चित्रासमाप्त रात्री का। पक्षी ६४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |
| तुलेदु | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ | २१३७४ |

विषय सत्यत् १६७६ लोकीक । धीरसम्यत् २७५५ । युगकामास ५८ । चौथे चन्द्र सम्यत्सकामास ११ । अथेष्टुदी । लोकोत्तरमासनाम । निदाह । यथिउत्रायणे ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सादे | १८ भाग | फले। सूर्य के साथ नक्षत्र १ |
|-----------|--------|---------------|-----------------------|-----------------------------|
| चन्द्रायन | प्रमाण | २ पक्षीप्रमाण | ३ गोरसी क्षाया प्रमाण | ४ |
| ११ | ० | ० | ० | ० |
| १२ | ० | ० | ० | ० |
| १३ | ० | ० | ० | ० |
| १४ | ० | ० | ० | ० |
| १५ | ० | ० | ० | ० |
| १६ | ० | ० | ० | ० |
| १७ | ० | ० | ० | ० |
| १८ | ० | ० | ० | ० |
| १९ | ० | ० | ० | ० |
| २० | ० | ० | ० | ० |
| २१ | ० | ० | ० | ० |
| २२ | ० | ० | ० | ० |
| २३ | ० | ० | ० | ० |
| २४ | ० | ० | ० | ० |
| २५ | ० | ० | ० | ० |
| २६ | ० | ० | ० | ० |
| २७ | ० | ० | ० | ० |
| २८ | ० | ० | ० | ० |
| २९ | ० | ० | ० | ० |
| ३० | ० | ० | ० | ० |
| ३१ | ० | ० | ० | ० |
| ३२ | ० | ० | ० | ० |
| ३३ | ० | ० | ० | ० |
| ३४ | ० | ० | ० | ० |
| ३५ | ० | ० | ० | ० |
| ३६ | ० | ० | ० | ० |
| ३७ | ० | ० | ० | ० |
| ३८ | ० | ० | ० | ० |
| ३९ | ० | ० | ० | ० |
| ४० | ० | ० | ० | ० |
| ४१ | ० | ० | ० | ० |
| ४२ | ० | ० | ० | ० |
| ४३ | ० | ० | ० | ० |
| ४४ | ० | ० | ० | ० |
| ४५ | ० | ० | ० | ० |
| ४६ | ० | ० | ० | ० |
| ४७ | ० | ० | ० | ० |
| ४८ | ० | ० | ० | ० |
| ४९ | ० | ० | ० | ० |
| ५० | ० | ० | ० | ० |
| ५१ | ० | ० | ० | ० |
| ५२ | ० | ० | ० | ० |
| ५३ | ० | ० | ० | ० |
| ५४ | ० | ० | ० | ० |
| ५५ | ० | ० | ० | ० |
| ५६ | ० | ० | ० | ० |
| ५७ | ० | ० | ० | ० |
| ५८ | ० | ० | ० | ० |
| ५९ | ० | ० | ० | ० |
| ६० | ० | ० | ० | ० |
| ६१ | ० | ० | ० | ० |
| ६२ | ० | ० | ० | ० |
| ६३ | ० | ० | ० | ० |
| ६४ | ० | ० | ० | ० |
| ६५ | ० | ० | ० | ० |
| ६६ | ० | ० | ० | ० |
| ६७ | ० | ० | ० | ० |
| ६८ | ० | ० | ० | ० |
| ६९ | ० | ० | ० | ० |
| ७० | ० | ० | ० | ० |
| ७१ | ० | ० | ० | ० |
| ७२ | ० | ० | ० | ० |
| ७३ | ० | ० | ० | ० |
| ७४ | ० | ० | ० | ० |
| ७५ | ० | ० | ० | ० |
| ७६ | ० | ० | ० | ० |
| ७७ | ० | ० | ० | ० |
| ७८ | ० | ० | ० | ० |
| ७९ | ० | ० | ० | ० |
| ८० | ० | ० | ० | ० |
| ८१ | ० | ० | ० | ० |
| ८२ | ० | ० | ० | ० |
| ८३ | ० | ० | ० | ० |
| ८४ | ० | ० | ० | ० |
| ८५ | ० | ० | ० | ० |
| ८६ | ० | ० | ० | ० |
| ८७ | ० | ० | ० | ० |
| ८८ | ० | ० | ० | ० |
| ८९ | ० | ० | ० | ० |
| ९० | ० | ० | ० | ० |
| ९१ | ० | ० | ० | ० |
| ९२ | ० | ० | ० | ० |
| ९३ | ० | ० | ० | ० |
| ९४ | ० | ० | ० | ० |
| ९५ | ० | ० | ० | ० |
| ९६ | ० | ० | ० | ० |
| ९७ | ० | ० | ० | ० |
| ९८ | ० | ० | ० | ० |
| ९९ | ० | ० | ० | ० |
| १०० | ० | ० | ० | ० |

चन्द्रमा २ दिन ६७ सादे १८ भाग फले। सूर्य के साथ नक्षत्र १
चन्द्रायन प्रमाण २ पक्षीप्रमाण ३ गोरसी क्षाया प्रमाण ४

चन्द्रमा २ दिन ६७ सादे १८ भाग फले। सूर्य के साथ नक्षत्र १
चन्द्रायन प्रमाण २ पक्षीप्रमाण ३ गोरसी क्षाया प्रमाण ४

निष्पन्न सम्यक्त १६७६ लोकीक । यीर सख्यत् २४४४ । जुगकागत ५० । पांचमा अतिवर्धन स्वाधत्सरकामात् १ । आधयणदी । लोकोत्तरमात् माय । अगिन्द । रधियत्रायणे ॥

[illegible]

विष्णु पञ्चम १५६ नोरीन् । गी० मन्त्र ३४४ । पञ्चमाग्निर्घन चन्द्रमन्त्रमरकानाम् २ । भावव्रयवद्दी । लोकोत्पत्तासकानाम् । पति पित । रविदक्षणायोगे ।

[illegible]

विष्णु सम्यत् १६७६ जोहीक । घोर सम्यत् २४४४ । अणकामास ४० । पांचमाअमिर्वर्धन सम्यत्सरका मास १ । श्रावणशुद्धी । लोकेश्वरमासनाम । अमिन्द । रविदक्षिणायणे ।

| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सांठ | १८ भाग | फले । सूर्य के साथ नक्षत्र १ चन्द्रायन प्रमाण २ । पक्षी प्रमाण ३ पोरसी छाया प्रमाण ४ |
|---|---|---|---|--|
| चन्द्रमा | २ दिन | ६७ सांठ | १८ भाग | फले । सूर्य के साथ नक्षत्र १ चन्द्रायन प्रमाण २ । पक्षी प्रमाण ३ पोरसी छाया प्रमाण ४ |
| ककेंदु । पुर्यापाड़ा समास रात्रीका । चन्द्रदर्शनम् | ३६॥ भाः उः सिधेंदु । सूर्यमास ४८ । २५५ छायापोरसी । उर्जापाड़ा रात्री का | ३६॥ भाः उः सिधेंदु । सूर्यमास ४८ । २५५ छायापोरसी । उर्जापाड़ा रात्री का | ३६॥ भाः उः सिधेंदु । सूर्यमास ४८ । २५५ छायापोरसी । उर्जापाड़ा रात्री का | ३६॥ भाः उः सिधेंदु । सूर्यमास ४८ । २५५ छायापोरसी । उर्जापाड़ा रात्री का |
| सिधेंदु कंकडकें शकांती । पावसम्भतु । गर्जने की आसभाई नहीं सुः रुद्र | ४४ भाः उः कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु |
| कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु | ४४ भाः उः कन्येंदु |
| ६॥ भाः उः तुलेंदु | ६॥ भाः उः तुलेंदु | ६॥ भाः उः तुलेंदु | ६॥ भाः उः तुलेंदु | ६॥ भाः उः तुलेंदु |
| तुलेंदु । शतुमास ४६ | तुलेंदु । शतुमास ४६ | तुलेंदु । शतुमास ४६ | तुलेंदु । शतुमास ४६ | तुलेंदु । शतुमास ४६ |
| २४ भाः उः वृषकेंदु । २५५ छायाः पोः | २४ भाः उः वृषकेंदु । २५५ छायाः पोः | २४ भाः उः वृषकेंदु । २५५ छायाः पोः | २४ भाः उः वृषकेंदु । २५५ छायाः पोः | २४ भाः उः वृषकेंदु । २५५ छायाः पोः |
| वृषकेंदु | वृषकेंदु | वृषकेंदु | वृषकेंदु | वृषकेंदु |
| ४३॥ भाः उः धनेंदु । पुण्डकें ४८ य उः अश्लेषाडकें ६ दिन ४२ घड़ी | ४३॥ भाः उः धनेंदु । पुण्डकें ४८ य उः अश्लेषाडकें ६ दिन ४२ घड़ी | ४३॥ भाः उः धनेंदु । पुण्डकें ४८ य उः अश्लेषाडकें ६ दिन ४२ घड़ी | ४३॥ भाः उः धनेंदु । पुण्डकें ४८ य उः अश्लेषाडकें ६ दिन ४२ घड़ी | ४३॥ भाः उः धनेंदु । पुण्डकें ४८ य उः अश्लेषाडकें ६ दिन ४२ घड़ी |
| धनेंदु | धनेंदु | धनेंदु | धनेंदु | धनेंदु |
| ६२ भाः उः मकरेंदु । नक्षत्र मास ४४ । चन्द्रायन २०८ | ६२ भाः उः मकरेंदु । नक्षत्र मास ४४ । चन्द्रायन २०८ | ६२ भाः उः मकरेंदु । नक्षत्र मास ४४ । चन्द्रायन २०८ | ६२ भाः उः मकरेंदु । नक्षत्र मास ४४ । चन्द्रायन २०८ | ६२ भाः उः मकरेंदु । नक्षत्र मास ४४ । चन्द्रायन २०८ |
| मकरेंदु । पक्षी १०० | मकरेंदु । पक्षी १०० | मकरेंदु । पक्षी १०० | मकरेंदु । पक्षी १०० | मकरेंदु । पक्षी १०० |

[illegible]

विषय मन्त्र १६७६ लोकीक । वीर सभ्यत् २४४६ । जुगकामास ५५ । पांचमा अभिवर्धन सभ्यत्परका मास ६ । गौप शुदी । लोकोत्तरमास नाम । शिव । रविदक्षिणायणे ॥

| चंद्रमा | २ दिन | ६७ सते | १८मागफस | सूर्य कं साथ नक्षत्र | १ |
|--|-------|----------------|---------|----------------------|----|
| चन्द्रायन प्रमाण | २ | । पत्नी प्रमाण | ३ | । पोरसी क्षायप्रमाण | ४ |
| १४॥ भा:उ: धनेदु | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| धनेदु । यन्त्रदर्शनम् | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| ३३ भा:उ: मकरेदु । नक्षत्रमास ५६ । चन्द्रायन ११८ उभायणे | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| मकरेदु | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| ५१॥ भा:उ: कुंभेदु । मुला ३० उ: पुर्वोयाडा ५६ १३ दि: २४ यङ्गी | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| कुंभेदु । रोहिणी समाप्त रात्री का | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| कुंभेदु । सूर्यमास ५३ सुगसत रात्री का ३ पग: ८ अं: क्षायः | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| ३ भा: उ: मीनेदु । धन ५६ अंक्राति | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| मीनेदु | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| २१॥ भा: उ: मंकेदु | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| मेकेदु । श्रुतमास ५४ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| ४० भा: ॥ वृक्षेदु | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| वृक्षेदु | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| ५८॥ भा:उ: मिथुनेदु । पत्नी ११० | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| मिथुनेदु । ३ पग १ अंक्रा | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |

विषय सम्बन्ध १६७६ लॉन्ग

चन्द्रमा २ दिन ६७ साहं १८ भाग फलें । सूर्य के साथ नक्षत्र शब्दनाथन

| | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----|---|----|---|----|-------|-------------|---------|------------|------|------------|------|-------|--|
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | १५३१५ | पुष्प | ७११५०३० | वालव | २३५५ | कोजव | २५३२ | ७१६५५ | ककेंदु ३ पग ११ छाया गोः |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | २५२१६ | मद्या | ३७११ | स्त्रीलोचन | २२५३ | गर | २५३२ | ७१६५५ | ४६॥भाःउः सिंघेदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ३५११८ | पूर्वा फाः | ३७११ | विणिज | २१५८ | वृष्टि | २५३३ | ७१६५५ | सिंघेदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ४५०२० | इया फाः | ३७११ | घव | २०५० | वालव | २५३३ | ७१६५५ | सिंघेदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ५५१२२ | उना फाः | ३७११ | कोलव | १६५२ | स्त्रीलोचन | २५३३ | ७१६५५ | १ भाःउः कन्येदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ६५२२४ | हस्त | ३७११ | गर | १८५५ | विणिज | २५३३ | ७१६५५ | कन्येदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ७५३२६ | चित्रा | ३७११ | वृष्टि | १७५६ | घव | २५३३ | ७१६५५ | १६॥भाःउः तुलेंदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ८५४२८ | विगाया | ३७११ | वालव | १६५८ | कोलव | २५३३ | ७१६५५ | तुलेंदु पुष्प समाप्त रात्रीका |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ९५५३० | विगाया | ३७११ | स्त्रीलोचन | १६६० | गर | २५३३ | ७१६५५ | ३८ भाःउः वृधकेंदु । ३ पग १० धा छाः |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | १०५५२ | अश्लेषा | ३७११ | विणिज | १५० | वृष्टि | २५३३ | ७१६५५ | वृधकेंदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | ११५५४ | मूला | ३७११ | यव | १५० | वालव | २५३३ | ७१६५५ | १६॥ भा उः धनेंदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | १२५५६ | पूर्वा फाः | ३७११ | कोलव | १३५ | स्त्रीलोचन | २५३३ | ७१६५५ | धनेंदु । अथवा ३६ घःउः धनेष्टा ५० १३ दि २५ घड़ी |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | १३५५८ | उत्रायाङ्गा | ३७११ | गर | १२६ | विणिज | २५३३ | ७१६५५ | धनेंदु |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | १४५६० | उत्रायाङ्गा | ३७११ | वृष्टि | ११८ | शुक्रन | २५३३ | ७१६५५ | धनःउः मकरेंदु नक्षत्रमास ६१ चन्द्रायन १२२ उत्रायणे पत्नी ११३ |
| गुर्वं | पु | र | गु | ग | मे | १५५६२ | अवण | ३७११ | चतुष्पद | १०१० | नाग | २५३३ | ७१६५५ | मकरेंदु |

५. ला० वीर सम्भवत् २४४६ । जुलकाभास ५६ । पाचमा अमियर्धनसम्यक्सत्तका भास १० । घैशापवदी । लोकौत्रभासनाम । कुलमसभय । रघुउत्रायणे ।

[illegible]

(१२४)

गणेश मय्यत् ११७७ टोरीक । धीर सम्यत् २४५६ । दुर्गकामास ६२ । पांचला अभिमर्धन सम्बत्सखा मास १३ । द्वितीय आषाढशुद्धी । लोकोत्तरभास नाम । वनविरोध द्वितिय । रविउन्नायणे

[illegible]

| १५ | दिन क नाम सूर्य के | शुभाशुभ | १५ | रात्रि के नाम सूर्य के | शुभाशुभ | १ | ग्रहारात्रि के | ३० | गुरुवार | शुभाशुभ |
|----|--------------------|------------|----|------------------------|------------|----|----------------|----|---------------|---------|
| १ | पुर्वाणा | मध्यम | १ | उत्तम | उत्तम | १ | रुद्र | १६ | आनंदे | शुभ |
| २ | सिद्धि मनोरथ | उत्तम | २ | सुनक्षत्र | शुभ | २ | श्वेत | १७ | धीजय | शुभ |
| ३ | मनोहर | शुभ | ३ | फलवत्या | मध्यम | ३ | मित्र | १८ | विश्वसेन | शुभ |
| ४ | जसोभदर | उत्तम | ४ | जसोधर | शुभ | ४ | वायु | १९ | प्रजापति | शुभ |
| ५ | जसोधर | उत्तम | ५ | सुमनसा | शुभ | ५ | सुपीत | २० | उपसम | शुभ |
| ६ | सर्व काम समृद्धी | उत्तमोत्तम | ६ | श्रीसंभुत | उत्तम | ६ | अमीचंदः शुभ | २१ | गंधर्व | शुभ |
| ७ | इंद्रमूखाभिसित | मध्यम | ७ | विजया | शुभ | ७ | मार्हद्र | २२ | अमिदेव | शुभ |
| ८ | सोमनसा | मध्यम | ८ | विजयति | शुभ | ८ | वज्रयानः शुभ | २३ | सत वृषभ | शुभ |
| ९ | धनेजय | शुभ | ९ | जयंती | उत्तम | ९ | प्रह्ला | २४ | आतापधान | शुभ |
| १० | अर्ध सिद्धि | उत्तमोत्तम | १० | अपराजित | उत्तमोत्तम | १० | बहुसत्यः शुभ | २५ | रुणयान | शुभ |
| ११ | अभीजाय | उत्तम | ११ | इच्छा | कनीष्ट | ११ | इंसान | २६ | मोमे | शुभ |
| १२ | अत्यंत सत | कनीष्ट | १२ | समाहा रा | कनीष्ट | १२ | त्वष्टा | २७ | वृषभ | शुभ |
| १३ | सयजप | उत्तमोत्तम | १३ | तेजा | मध्यम | १३ | भवितारमाः शुभ | २८ | सर्वोर्धसिद्ध | शुभ |
| १४ | अग्नीदेसे | अशुभ | १४ | अतितेजा | कनीष्ट | १४ | येधमण | २९ | राक्षस | शुभ |
| १५ | उपसम | मध्यम | १५ | देवर्षिदानिर्द | उत्तमोत्तम | १५ | वाक्य | ३० | | शुभ |

१२४
 १६७७ लोकीक । वीर समयत् २५४६ । जुगनामास ई२ । पांचना अमिर्वन सम्यत्सका मास १३ । द्वितीय आपाद्दुदो । लोकोत्तारमास नाम । वनविरोध द्वितीय । रविउत्रायणे

[illegible]

| १५ | दिन के नाम सूर्य के | शुभाशुभ | १६ | रात्रि के नाम सूर्य के | शुभाशुभ | १ | ग्रहोपनिषि के | ३० | सुहस्र | शुभाशुभ |
|----|---------------------|------------|----|------------------------|------------|----|----------------|----|---------------|---------|
| १ | पुर्वाणा | मध्यम | १ | उत्तम | उत्तम | १ | रुद्र | १६ | आनन्दे | शुभ |
| २ | सिद्धि मनोरथ | उत्तम | २ | सुनक्षत्र | शुभ | २ | श्वेत | १७ | वीजय | शुभ |
| ३ | मनोहर | शुभ | ३ | पलकल्या | मध्यम | ३ | मित्र | १८ | विश्वसेन | शुभ |
| ४ | जसोभदर | उत्तम | ४ | जसोधर | शुभ | ४ | वायु | १९ | प्रजापत | शुभ |
| ५ | जसोधर | उत्तम | ५ | सुमनसा | शुभ | ५ | सुपीत | २० | उपसम | शुभ |
| ६ | सर्व काम समुधी | उत्तमोत्तम | ६ | श्रीसुत | उत्तम | ६ | अमीचंदः शुभ | २१ | गंधर्व | शुभ |
| ७ | इंदुमूखाभिसित | मध्यम | ७ | विजया | शुभ | ७ | मार्हद | २२ | अग्निदेव | शुभ |
| ८ | सोमनसा | मध्यम | ८ | विजयति | शुभ | ८ | वलयातः शुभ | २३ | सत वृषभ | शुभ |
| ९ | धनेजय | शुभ | ९ | जयंती | उत्तम | ९ | प्रसा | २४ | आतापयान | शुभ |
| १० | अर्थ सिद्धि | उत्तमोत्तम | १० | अपराजित | उत्तमोत्तम | १० | पुसुसत्यः शुभ | २५ | रुग्गयान | शुभ |
| ११ | अमीजाय | उत्तम | ११ | रुक्म | कनीष्ट | ११ | ईसान | २६ | मोमे | शुभ |
| १२ | अत्यंत सत | कनीष्ट | १२ | समाहा रा | कनीष्ट | १२ | त्वष्टा | २७ | वृषभ | शुभ |
| १३ | सत्यजप | उत्तमोत्तम | १३ | तेजा | मध्यम | १३ | भवितात्माः शुभ | २८ | सर्वार्थसिद्ध | शुभ |
| १४ | अग्नीविसे | अशुभ | १४ | अतितेजा | कनीष्ट | १४ | वैश्रमण | २९ | रात्तस | शुभ |
| १५ | उपसम | मध्यम | १५ | देवनादनादि | उत्तमोत्तम | १५ | वारुण | ३० | | शुभ |

मानवृद्धि क १० मन्त्रों क नाम

मृगसिरा १ आत्रा २ पुष्प ३ पूर्वा भाद्रपदा ४ पूर्वा फाल्गुणी
५ पूर्वायादा ६ मूला ७ अश्लेषा ८ हस्त ९ चित्रा १०

नाम रासी देखने का यंत्र

सु चे चो ला ली लु ले ला मा मेख, ई उ ए ओ धा वी लु
वे वो. बुख, का की कु घ ङ छ क को ह्रा मियुन, ही डु हे हो
डा डी डु डे डो. कर्क, मा मी मु मे मो टा टी टु टे सिह,
टो पा पी पु प ण ठ पे पो कन्या, रा री रु रं रो ता ती तु
ते तुला, तो नी नु ने ना या यी यु दृधरु, ये यो भा भी भु
धा फा हा भे धन, भो भा जी लु जेजो ख णा खुखेखो गार गी
मकर, गु मे गो सा सी सु से सो दा कुंम, दि दु ल भ ष दे
दां ला ची मीन, इति उपयंती समज क और जगा से
लिखा गया है ।

॥३॥ नक्षत्र दिक्षा के क्रम

अभिज १ आषाढ २ अश्वनी ३ रोहिणी ४ मृगसिरा ५ पुष्प
६ रेवती ७ हस्त ८ अनुराधा ९ जेष्ठा १० तीन उषा १३

| दिनकी तिथीका नामः १: ६-११-नंदा: २: ७-१२ मद्रा: ३-८ १३-जमा ४-६-१४-तुच्छा ५: १०-१५ पूर्णा | मास की तिथीके नाम १६-११-उम्रवती-२-७-१२-योगवती- ३-८-१३-जसवती-४-६-१४-सर्वसिधि ५-१०-१५ शुभ | कण घटे (कालक) का सधा मुहूर्त्त होया युग कि आदि में दिन उगते घटत पहलो महर्त्त हुय फिर न मिले श्योंकि दिन घटने बढने के कारण |
|---|--|--|
| गुंय चोना. लीलु लेलो. आ ई उ ए. ओया पीनु देवो कही. क प ङ घ. क कां हा ही. ह दे होझ | अश्विनी भानी कृतिश रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य | ती तु ते तो. ना नी नु मे. नी या यी यु. ये यो या भी. भु धां फा डा. मे भो जा जी. जु जे जो या जा खु खे खो. |
| | अश्लेषा मघा पूर्वा फा: उतरा फा: द्वस्त चित्रा स्वाती | विष्णवा अनुराधा ज्येष्ठा मूला पूर्वाषाढा वज्रपाढा अश्वीन श्रवण |
| | धनेष्टा सतभिषा उत्राषाद्रपदा रेवती | मा गी गु मे. गो ला सी सु. हु ज झ ध. , दे दो डा धी. |

नाम-वत्तत्र देयने का यंत्र

यद्वा दिन छत्तीस घड़ी रात चारों कम जान हुआ दिन दाक्षिणापण का उलट उत्तरापण मान ॥८॥

भाग एकमठ घड़ी एक के चारों चार घटत उलट वट हर दिन बिये दिन दिन रात घटत ॥९॥

इफने चौतीस चन्द्र की पाचसाल की ऐन, अभिजित पुण्य नक्षत्र में बदले भाषत जैन ॥१०॥

अथ लौद वर्णन ।

दोहा-पाँच अभिवर्धन में पड़े दो चन्द्रके बाद, चौथाचन्द्र छोड़के पड़े आपाद रत्न याद ॥११॥

जैन मास नाम ।

दोहा-भाचण मास १ अभिनद है, २ प्रातिष्ठित भादों जान, ३ बिने ४ प्रतिवर्धन चतुर्थ ५ श्री यास ६ शिवे ७ सिसराण ॥१२॥

८ हेमंत ९ वसंत नवमां समस्त १० कुसुम संभव नाम ११ निद्रोह १२ वण विरोधक चारापास तर्पण ॥१३॥

चन्द्रमां और सूर्य के साथ नक्षत्र रहने का प्रमाण ।

दोहा-चार दिन चारों घड़ी सूर्यो का प्रमाण अभिजित आठारां घड़ी चवन भाग चन्द्र साथे जान ॥१४॥

सतभिषां भरणी आत्रा अरुणा स्वाति जान ६ सप्त दिन ४२ न्याली ड्यप्ला चन्द्र अर्धे दिन १० घड़ी प्रमाण ॥१५॥

आपाद भद्र फाल्गुनी उत्तरा रोहनी जान नव्वे विषाया पूनर्वसु २० दिन ६ घड़ी विशाखे सूर्य मान ॥१६॥

छातिमा हस्त अनुराधा मूला चित्रा जान पन्द्रा नक्षत्र चन्द्र साथ साठ घड़ी प्रमाण ॥१७॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुखं भवति योगिनेषु

॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ सुखं भवति योगिनेषु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निम्नलिखित गणना नैत लादी.

नदा दिन छतीस घड़ी रात धारां कम जान दुजा दिन दाक्षिणायण का उलट उत्तरायण जान ॥८॥
 भाग एकगठ घड़ी एक के चारों चार घटत उलट कंठ हर दिन विषे दिन दिन रात घटत ॥९॥
 एकमौ चौतीस चंद्र की पाचसाल की ऐन, अभिजित पुण्य नक्षत्र में बदले भाषत जैन ॥१०॥

अथ लौंद वर्णन ।

दोहा-पाप अभिवर्धन में पड़े दो चंद्रके बाद, चौथाचन्द्र छोटके पड़े आपाद रत्न याद ॥११॥

जैन मास नाम ।

दोहा-प्रचण मास १ अभिनंद है, २ प्रतिएष्ट भादों जान, ३ विजे ४ प्रतिवर्धन चतुर्थ ५ श्री यांत ६ शिवे ७ सितराण ॥१२॥
 ८ ऐमंत ९ वसंत नवमां समझ १० कुसुम संभर नाम ११ निदाहे १२ वण विरोधतक बारांमास तर्पाय ॥१३॥

चन्द्रमां और सूर्य के साथ नक्षत्र रहने का प्रमाण ।

दोहा-चार दिन बारां घड़ी सूर्यो का प्रमाण अभिजित आठारां घड़ी चवन भाग चन्द्र साथे जान ॥१४॥
 सप्तमिषां भरणी आठ्रा अश्लेषा स्वाति जान ६ सप्त दिन ४२ व्याली ड्यष्टा चन्द्र अर्धे दिन ३० घड़ी प्रमाण ॥१५॥
 आपाद मद्रव फाल्गुनी उत्तरा रोहनी जान नव्वे विधाणा पूनर्वसु २० दिन ६ घड़ी विशेछे सूर्ये जान ॥१६॥
 कृतिमा हस्त अनुराधा मूला वित्रा जान पन्द्रा नक्षत्र चन्द्र साथ मात घड़ी प्रमाण ॥१७॥

११७२ से २००७ प्रयंत चन्द्र सूर्य ग्रहणा विक्रमां सम्भवत तक लिखत है ॥

| | | | | | | | | | | | | |
|------|----------|-------|-----|--------|--------------|---------------|------|-------------|------|-----|--------|-------------|
| ११७२ | मे | ग्रहण | नदी | हे | ० | | १६६१ | आषाढ | सुदी | वार | वृश्चि | चन्द्र |
| ११७३ | मे | ग्रहण | नदी | हे | ० | | १६६१ | आषाढ | सुदी | वार | जनि | चन्द्र |
| ११७४ | आषाढ | सुदी | वार | युज | चन्द्र ग्रहण | | १६६२ | पौष | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र |
| ११७५ | ज्येष्ठ | सुदी | वार | रवि | चन्द्र | | १६६३ | आषाढ | सुदी | वार | शुक्र | सूर्यग्रहण |
| ११७६ | कार्तिक | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र | | १६६३ | आषाढ | सुदी | वार | जनि | चन्द्रग्रहण |
| ११७७ | कार्तिक | सुदी | वार | रवि | चन्द्र | | १६६४ | आषाढ | सुदी | वार | चन्द्र | चन्द्र |
| ११७८ | कार्तिक | पदी | वार | वृश्चि | सूर्यग्रहण | | १६६५ | पौष | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र |
| ११७९ | मङ्गसु | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र | | १६६७ | फाल्गुण | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र |
| ११८० | भाद्रपद | सुदी | वार | वृश्चि | चन्द्र | | १६६८ | भाद्रपद | सुदी | वार | शुक्र | सूर्य |
| ११८१ | फाल्गुण | सुदी | वार | रवि | चन्द्र | | १६६८ | भाद्रपद | सुदी | वार | शुक्र | चन्द्र |
| ११८२ | भाद्रपद | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र | | १६६८ | भाद्रपद | सुदी | वार | रवि | चन्द्र |
| ११८३ | फाल्गुण | पदी | वार | शुक्र | सूर्य | | १६६८ | भाद्रपद | सुदी | वार | रवि | चन्द्र |
| ११८४ | ज्येष्ठ | सुदी | वार | रवि | चन्द्रग्रहण | ग्राहद दिनेया | २००० | आषाढ | सुदी | वार | रवि | चन्द्र |
| ११८५ | शुक्लतिर | पदी | वार | चन्द्र | सूर्यग्रहण | [न दिनेया | २००१ | आषाढ | सुदी | वार | रवि | सूर्यग्रहण |
| ११८६ | ज्येष्ठ | पदी | वार | सूर्य | सूर्य | | २००२ | पृथ्वी आषाढ | सुदी | वार | चन्द्र | चन्द्रग्रहण |
| ११८७ | शुक्लतिर | सुदी | वार | वृश्चि | चन्द्र | | २००२ | मृगशिर | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र |
| ११८८ | शुक्लतिर | सुदी | वार | वृश्चि | चन्द्र | | २००३ | मृगशिर | सुदी | वार | रवि | चन्द्र |
| ११८९ | शुक्लतिर | सुदी | वार | जनि | चन्द्र | | २००४ | ज्येष्ठ | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र |
| ११९० | शुक्लतिर | सुदी | वार | मंगल | चन्द्र | | २००४ | ज्येष्ठ | सुदी | वार | रवि | चन्द्र |
| ११९१ | शुक्लतिर | सुदी | वार | सुप्र | चन्द्र | | २००५ | ज्येष्ठ | सुदी | वार | सुप्र | सूर्यग्रहण |
| ११९२ | शुक्लतिर | सुदी | वार | चन्द्र | सूर्यग्रहण | | २००५ | ज्येष्ठ | सुदी | वार | रवि | चन्द्रग्रहण |

